ੴ

Hira nand

ॐ

" कलौत केवला भक्तिः "

शब्द संग्रह

Shabd Sangrah

भगवद्भक्ति आश्रम, रामपुरा

(रेवाड़ी)

Registered (रजिस्टरी कीगई)

२००० प्रति] सं० १९८० [मूल्य प्रेम

गयादत्त शर्मा के प्रबन्ध से

गयादत्त प्रेस, बड़ा दरीबा देहली में छपा ।

नम्र निवेदन ।

मेरे प्यारे बन्धु वर्ग ! यदि आप स्वयं सुख और शान्ति चाहते हैं और संसार को सुखमय व शान्त बनाना चाहते हैं; तो उस कल्याणकारिणी भक्ति का आचरण कर संसार में भक्ति फैलाने का प्रयत्न करो । जिस भक्ति में मग्न होकर ऋषि, मुनि नृत्य करते थे, जिस भक्ति के बल से भगवान राम और कृष्ण ने संसार को स्वर्ग बना दिया था उसका रस पान करने और कराने के लिये उन ऋषि, मुनि महात्माओं के बनाए गीत गाओ और उन गीतों को फैलाओ । मोक्ष में भक्ति से बढ़कर कोई साधन नहीं है और उपासना में गाने से बढ़ कर कोई तरीक़ा नहीं है । देश के नर, नारी और बालक यदि प्रेम में मग्न होकर भगवान के गीत गावेंगे तो भगवान अवश्यमेव मनवाञ्छित फल प्रदान करेंगे ।

भक्तों का दास—दलीप बनस्थी

श्री भगवद्भक्ति आश्रम,

रामपुरा पो० रेवाड़ी (दिल्ली)

❀ ओ३म् ❀

भगवद्भक्ति आश्रम,

रामपुरा ।

यह आश्रम रेवाड़ी जंकशन से पश्चिम दिशा में लगभग एक कोस के अन्तर पर जंगल में अति पवित्र भूमि में बना है। जल की सुविधा के लिये एक कूप है दूसरा तालाब "रामसर" तीर्थरूप जो अभी खोदा जारहा है उसमें पक्के घाट बनाए जाने का आयोजन होरहा है तालाब के आस पास कई बीघों में उपयोगी वृक्ष लगे हैं लगभग ६०० बीघे भूमि आश्रम से लगी हुई गौओं के चरने के लिये श्री लेफ्टीनेण्ट राव बलबीरसिंह जी ने आश्रम के लिये प्रदान की है । जिसमें गौ, मृग आदि स्वछन्द चरते हैं । इस वन में शिकार नहीं खेला जाता ।

इस समय आश्रम में एक ब्रह्मचर्याश्रम, साधारण पाठशाला, कन्या पाठशाला, अछूत पाठशाला और अतिथियों व सत्सङ्गियों के ठहरने का स्थान व एक पुस्तकालय है।

उद्देश्य।

१–श्री भगवान की भक्ति का प्रचार करना।

२–गौ रक्षण और उसके लिये गोचर भूमि छुड़वाना।

३–जङ्गलों में वृक्ष लगवाना और बीच में जलाशय बनवाना।

४–शिक्षा का प्रचार करना (जिसमें मनुष्य मात्र विद्यालाभ कर सकें) और प्राचीन प्रथा का फिर प्रचलित करना।

५–बीमारियों के अवसर पर दवाई बांटना।

६–आस पास के ग्रामों में परस्पर के झगड़े और वैमनस्य मिटा कर शान्ति और प्रेम बढ़ाना।

७–सब संस्थाओं में भगवद्भक्ति और धर्म्म का भाव जाग्रत करना।

८–राजा और प्रजा सब ही का हितचिन्तन करना।

यह आश्रम नियमानुसार एक कमेटी की संरक्षता में है आश्रम से सत्यशब्द-संग्रह, सारसंग्रह, और भक्तियोग-संग्रह, महसूल डाक के टिकट भेजने पर मुफ्त भेजी जाती हैं।

नोट--आश्रम से "ज्ञानयोग भक्तिमार्ग" नाम का मासिकपत्र हिन्दी भाषा में प्रकाशित करने का विचार है यदि भक्तजन यत्न करके ५०० ग्राहकों के नाम भेज दें तो पत्र शीघ्र जारी कर दिया जावे।

पुस्तक मिलने का पता—

श्री भगवद्भक्ति आश्रम,

रामपुरा

पो॰ रेवाड़ी (दिल्ली)

❀ श्रीकृष्णाय नमः ❀

सार-संग्रह

संग्रह-कर्त्री

श्रीमती सूरजदेवी ।

प्रकाशक

श्रीभगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा, रेवाड़ी

मुद्रक

भूमानन्द ब्रह्मचारी "भक्ति प्रेस" श्रीभगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा रेवाड़ी ।

तृतीया वृत्ति १००० | सन् १९८४ | मूल्य ≡)

बन्दौ राम नाम रघुबर के। हेतु कृषानु भानु हिम करके॥

राग सिहाना।

गाइये गणपति जगबन्दन। शङ्कर सुवन भवानी नन्दन॥
सिद्धिसदन गजबदन बिनायक। कृपासिन्धु तुम्हो सबलायक॥
मोदक मुद प्रिय मंगलदाता। विद्यावारिधि बुद्धि बिधाता॥
मांगत तुलसीदास कर जोरे। बसहु राम सिय मानस मोरे॥

गोविन्दाष्टक।

सत्यं ज्ञान मनन्तं नित्यमनाकाशं परमाकाशं।
गोष्ठप्राङ्गणरिङ्गणलोल, मनायासं परमायासम्॥
माया कल्पित नानाकार, मनाकारं भुवनाकारम्।
क्ष्मामानाथ मनाथं प्रणमत, गोविन्दं परमानन्दं॥ १॥
मृत्सामत्सि हेति यशोदा, ताडन शैशव संत्रासं।
व्यादित् वक्त्रा लोकित, लोका लोक चतुर्दश लोकालिम्॥
लोकत्रयपुर मूलस्तम्भं, लोकालोकमनालोकं।
लोकेशं परमेशं प्रणमत, गोविन्द परमानन्दम्॥ २॥
त्रविष्टपरिपुवीरघ्नं, क्षिति भारघ्नं भवरोगघ्नं।

कैवल्यं नवनीताहारं, मनाहारं भुवनाहारम् ॥
वैमल्य स्फुट चेतो वृत्ति, विशेषा भा‌ऽ मनाभासं ।
शैवं केवल शान्तं प्रणमत, गोविन्दं परमानन्दम् ॥ ३ ॥
गोपालं प्रभु लीला विग्रह, गोपालं कुल गोपालं ।
गोपी खेलन गोवर्द्धन धृत, लीला लालित गोपालम् ॥
गोभिर्निगदित गोविन्द स्फुट नामानं बहु नामानं ।
गोधी गोचर दूरं प्रणमत, गोविन्दं परमानन्दम् ॥ ४ ॥
गोपी मण्डल गोष्ठी भेदं, भेदावस्थम भेदाभम् ।
शश्वद् गोखुर निर्धूतो धृत, धूली धूसर सौभाग्यं ॥
श्रद्धा भक्ति गृहीत्वा नन्द, मचिन्त्यं चिन्तित सद्भावं ।
चिन्तामणि मणिमानं प्रणमत, गोविन्दं परमानन्दम् ॥ ५
स्नान व्याकुल योषिद् वस्त्र, मुपादायग मुपारूढं ।
व्यादित संतीरथ दिग् वस्त्रा, वस्त्र मुपा कर्षन्तन्ता ॥
निर्धूतद्वय शोक विमोहं, बुद्धं बुद्धे रन्तस्थं ।
सत्तामात्र शरीरं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥ ६ ॥
कान्तं कारण कारण मादि; मनादि काल मना भासं ।
कालिन्दि गत कालिय शिरसि, नृत्यन्तं मुहुनृत्यन्तम् ॥
कालं काल कलातीतं, कलिता शेष कलि दोषघ्नं ।

कालत्रय गति हेतुं प्रणमत, गोविन्दं परमानन्दम् ॥ ७ ॥
वृन्दावन भुवि वृन्दारकगण वृन्दा राधित वन्देहम् ।
कुन्दा भामल मंदस्मेर, सुधानन्दं सुहृदानन्दम् ॥
वन्द्याशेष महा मुनि मानस, वन्द्यानन्दपदद्वन्द्वं ।
वन्द्या शेष गुणाब्धिं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥ ८ ॥
गोविंदाष्टक मेतद्धीते, गोविंदार्पित संचेता ।
गोविंदांघ्रि सरोज ध्यान, सुधाजल धौत समस्ताघः ॥
गोविंदाच्युत माधव विष्णो गोकुल नायक कृष्णेति ।
नित्यं गायन यास्यति भक्तो, गोविंदं परमानन्दम् ॥ ९ ॥

गुरोरष्टम् ।

शरीरं सुरूपं तथा वा कलत्रं यशश्चारु चित्रं धनं मेरु तुल्यम् । गुरोरंघ्रि पद्मे मनश्चेन्न लग्नं ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥ १ ॥

कलत्रं धनं पुत्र पौत्रादि सर्वं गृहं बांधवाः सर्वमेतद्धि जातम् । गुरोरंघ्रि पद्मे मनश्चेन्न लग्न ततः किम्० ॥ २ ॥

षडंगादि वेदो मुखे शास्त्र विद्या कवित्वादि गद्यं सुपद्यं करोति । गुरो रंघ्रि पद्मे० ॥ ३ ॥

क्षमा मन्डले भूप भूपाल वृन्दैः सदा सेवितं यस्य पादार विंदम्। गुरोरंघ्रि पद्मे० ॥ ४ ॥

यशो मे गतं दिक्षु दानःप्रतापात् जगद्वस्तु सर्वं करे यत् प्रसादात्। गुरो रंघ्रि पद्मे० ॥ ५ ॥

न भोगे न योगे न वावाजि राजौ न कान्ता मुखे नैव वित्तेषु चित्तम्। गुरो रंघ्रि पद्मे० ॥ ६ ॥

अरण्ये न वासः स्व गेहे न कार्ये न देहे मनो वर्तते मे त्वनर्घ्ये। गुरो रंघ्रि पद्मे० ॥ ७ ॥

अनर्घ्याणि रत्नानि भुक्तानि सम्यक्समालिंगिता कामिनी यामिनीषु। गुरो रंघ्रि पद्मे० ॥ ८ ॥

गुरोष्टकं यः पठेत्पुण्य देही यतिर्भूपति ब्रह्मचारी च गेही। लभेद्वांछितार्थं पदं ब्रह्म संज्ञं गुरोरुक्त वाक्ये मनो यस्य लग्नम् ॥ ९ ॥

गुरु भक्ति।

सब धरती कागज करूं, लेखनि सब बनराय।
सात सिन्धु की मसि करूं, गुरु गुण लिखा न जाय ॥१॥
गुरु नाम है ज्ञान का, शिष्य सीख ले सोय।

प्रस्तावना।

करुणावरुणालय भगवान् को कोटिशः धन्यवाद है जिसकी महती अनुकम्पा से हमें आज इस सर्व जनोपयोगी पुस्तक का तृतीय संस्करण प्रकाशित करने का शुभावसर प्राप्त हुआ है। पहले दो संस्करणों में हम इसे यथा क्रम नहीं कर सके थे। अब की वार हमने इस पुस्तक के सब विषयों को यथाक्रम रख कर सर्व प्रकार से रुचिकर बनाने का प्रयत्न किया है। अज्ञानी जीव माया जाल में फंस कर उस परम पिता परमात्मा को विसार देता है जो जनक रूप होकर इस समस्त संसार को प्रकट करता है और पुनः प्रकटित विश्व का पालन करता है। इस कलिकाल में ऐसे भगवान् के सुपुत्र कहलाने के लिये सबसे सरल मार्ग उसकी भक्ति है। नवधा भक्ति में भी कीर्त्तन रूपी भक्ति सर्व श्रेष्ठ है। इसी हेतु भक्त जनों के लाभार्थ श्रीमति सूरज देवी ने जो कि साक्षात् त्याग मूर्ति हैं कठिन परिश्रम से कबीर, दादू, नानक, रैदास, मीरां आदि पूजनीय महात्माओं की वाणियों का जिन के एक एक शब्द परम श्रद्धा और भक्ति से युक्त

हैं और जिनके भक्ति युक्त गान से जीव का संसार सागर से उद्धार हो सकता है। यह उन महात्माओं की ऐसी पवित्र वाणियों का सार है। इसका पूर्णानन्द तो वही प्राप्त कर सकेंगे जोश्री सद्गुरु के चरणों की कृपा से इनका वार वार मनन व निदिध्यासन करेंगे। अन्त में हमारी यही प्रार्थना है कि जो इस पुस्तक को पढें उन को श्री सद्गुरु के चरणों में प्रीति हो और वह भगवान की भक्ति के अनुरागी होकर भवसागर से तरने के अधिकारी हों।

भूमानन्द ब्रह्मचारी।

सम्वत् १६८४

श्रीभगवद्भक्ति आश्रम।

रामपुरा (रेवाड़ी)

सद्गुरु का उपदेश।

ओ३म् तत्सत् परब्रह्मणे नमः।

समुद्र जब स्थिर रहता है तब उसे ब्रह्म कहते हैं और उसी समुद्र में जब लहर उठती हैं तब उसी को हम शक्ति या माया कहते हैं वही देश काल निमित्त स्वरूप है। सविशेष सगुण निर्विशेष निर्गुण उसके दो रूप हैं। पहिले रूप में वह ईश्वर जीव और जगत् है और दूसरे रूप में वह अज्ञात और अज्ञेय है। सर्व शक्तिमत्ता सर्व व्यापकता अनन्तदया उसी जगज्जननी जगदम्बा प्रेमरूपिणी भगवती के गुण हैं। प्रत्येक व्यक्ति के पीछे अनन्त शक्ति विद्यमान है एक कणविन्दु कृष्ण बुद्ध खीष्ट आदि और जगत् का विस्तार एक बिन्दु को प्रकाशित करता है। एक आत्मा ब्रह्म भिन्न २ सर्व उपाधियों में प्रकाशित होता है। बड़प्पन की डींग दलबन्दी ईर्ष्यादि सदा के लिये छोड़दो पृथ्वी की भाँति सहिष्णु हो जाओ। लड़कपन की चञ्चलता और युवापन की गम्भीरता दोनों मिलाकर सब के साथ प्रेम से रहो।

आत्मा के स्वरूप का व्यक्त और कभी अव्यक्त भाव होता है। आत्मा मानों बादलों से ढके हुए सूर्य की न्याईं है। हृदय को समुद्र के समान महान् बना डालो, क्षुद्र भावों को पार कर जाओ, अमंगल के आने पर भी आनन्द में उन्मत्त हो जाओ। संसार को एक चित्र की भांति देखो जगत् में कोई तुमको विचलित न कर सकेगा। अहन्ता को दूर कर दृढ़ता से खड़े होजाओ काम कांचन मान यश को छोड़ कर ईश्वर को दृढ़ता से पकड़ो। विधि निषेध के घेरे में पड़े रहने से आत्मा का प्रसार नहीं होता। जो जितनी ही आत्मानुभूति का प्रकाश कर सकता है उनके उतने ही विधि निषेध कम होजाते हैं। दूसरों की सेवा शुभ कर्म है इसी के प्रभावसे चित्त शुद्ध होता है इसी के प्रभाव से सबके भीतर बैठे हुए अन्तर्यामी भगवान् प्रकाशित होते हैं। आदेश के अनुसार संगठन करने का उद्योग करना, धर्म का यही लक्ष्य है यही उद्देश्य है। आदर्श धार्मिक क्षमा धृति शौच शान्ति उपासना और ध्यान में परायण आदर्श का अवलम्बन विस्तार ही जीवन और संकीर्णता ही मृत्यु है। जहां प्रेम वहीं विस्तार जहां स्वार्थता वहीं संकोच। अतएव प्रेम ही जीवन का एक

आधार है अवश्य अहैतुक प्रेम करना चाहिये वही एक मात्र जीवन गति का नियम न करने वाला है जिस कर्म से जीवों के मन में धीरे २ ब्रह्मभाव के उदय होने में सहायता पहुंचे वही कर्म उत्तम है यदि किसी को अधिक सभीता देना हो तो बलवान की अपेक्षा दुर्बल को अधिक सुभीता दो सदा दाता बनो अपना सर्वस्व दे डालो पर बदले में कुछ न चाहो। दूसरों से प्रेम करो, सहायता करो, सेवा करो तुम से जो कुछ बने दूसरों के लिये करो पर सावधान पलटे में कुछ न चाहो। व्यक्तिगत, देशगत, कालगत, कर्माकर्म का साधन करो।

"परोपकाराय सतांहि जीविनम्"

श्री सच्चिदानन्देश्वराय नमः

ओ३म् श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः।

आलस्यं मृत्युरित्याहु यत्नं जीवनमित्युत।
पिपीलिकाः कणशः कणशोऽन्नं समाहृत्य २ चिचरं प्रपूरयन्ति॥
पुत्तिका वल्मीक सञ्चयात् क्षणमपि न विरमन्ति।
सूर्यादयोग्रहामहता वेगेन भ्रमन्तः क्षणमपि विश्रान्तिं न कांक्षन्ति

क्षणमपि स्तभिते समीरणो कथमिव व्याकुलो भवन्तिजीवाः

हे सच्चिदानन्द अनन्त ज्ञान स्वरूप नित्य शुद्ध, बुद्ध, मुक्त स्वभाव सर्वशक्तिमान सर्व हृदयान्तर्गत सर्वव्यापक प्रभु। यदि मैं तुमको यहां मनुष्य शरीर में रहते हुए भी अपने आत्मा में साक्षात् नहीं कर पाता तो और कहां पा सकूंगा। अय! मेरे प्यारे परमात्मा मेरे हृदय और नेत्रों में प्रकट हो कर साक्षात् दर्शन दिखाओगे तो इस जीव का कल्याण होगा। ओ३म् परमात्मा यह न वह वरंच सारे पदार्थों में है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड उसका जीवन चरित्र है जो सब के हृदय में विराजमान होकर वह स्वयं लिख रहा है। सारे पदार्थ परमात्मा के शब्द हैं और बोलते हैं कि आओ २ मेरी ओर आओ। जो ईश्वर ध्वनी को नहीं सुनता वह बहरा है। जो मनुष्य उत्पन्न हुए पदार्थों के सौन्दर्य को नहीं देखता वह अन्धा है सौन्दर्य विवेक धर्म एक ही है। तर्क से हम परमात्मा का चिन्तन करते हैं परन्तु सौंदर्य साक्षात् दर्शन कराता है। वह मनुष्य जो इन सकल पदार्थों को निरीक्षण करके भी धन्यवाद गायन नहीं करता वह गूगा है। संसार की सुन्दर वस्तुयें एक विशेष सौन्दर्य की सत्ता की साक्षी हैं प्रत्येक मधुर वस्तु

अत्युत्तम मधु को दर्शाती है जो अन्य पदार्थों के सौन्दर्य और उत्तमता का स्रोत है। उसीको परमात्मा कहते हैं जो वस्तु ईश्वर के समीप है वह उत्तम है और जो दूर है वह निकृष्ट कहाती है। प्रत्येक पवित्रतायें उस पवित्रता के स्रोत को दर्शाती हैं। जो अच्छा है वह अपनेसे अत्युत्तम श्रेष्ठताके अस्तित्व का प्रमाण है उच्च स्वर से सकल पदार्थ पुकार रहे हैं कि परमात्मा सब में विद्यमान है। जब हम किसी वस्तु से प्यार करते हैं तो उसके आभ्यन्तर वास करने वाले परमात्मा के कारण से करते हैं। प्यासा मनुष्य जल की अभिलाषा इसलिये करता है कि जल में परमात्मा निवास करते हैं परमात्मा भक्तों के हृदय में प्रकट होते हैं। महान् से महान् सुख अच्छे कामों के चिन्तन से होता है परमात्मा उन से प्यार करते हैं जो बुरे कामों से घृणा कर श्रेष्ठ कार्यानुरत रहते हैं।

साधारण नियम।

१-मनुष्य का पहिला कर्तव्य है कि सद्गुरु की शरण में जावे और उनकी कृपा सम्पादन करने के लिये शुद्ध चित्त से उनकी सेवा करे।

२-उन सद्गुरु के वचनों पर दृढ़ विश्वास रक्खे।

३-एक ही मत मार्ग का अनुसरण करे।

४-साधु सज्जन का सत्संग करे।

५-विषयों के आधीन न हो।

६-शत्रुओं को मित्र बनावे।

७-अधिक उपाधि न बढ़ावे।

८-निरन्तर सारासार का विचार करता रहे।

९-भूत मात्र पर दया रक्खे।

१०-अहर्निश परमात्मा का ध्यान करके उन पर दृढ़ आस्था रक्खे।

भजन ७

टेक–लज्जा मेरी राखो श्याम हरी।

कीनो कठिन दुशासन मोय से, गह कैसों पकड़ी ॥

आगे सभा दुष्ट दुर्योधन, चाहत नगन करी।

पांचो पण्डा सभी बल हारे, इन से कछु ना सरी ॥ १ ॥

भीष्म द्रोण बिदुर भये विस्मय, इन सब मौन धरी।

अब नहीं मातु पिता सुत बान्धव, एक टेक तुम्हरी ॥ २॥

बसन प्रवाह दिये करुणानिधि, सेना हार परी।

सूरदास जब सिंह शरण लई, स्यारों की क्या है डरी ॥३

भजन ८

टेक–किन तेरो गोविन्द नाम धरो।

लेन देन के तुम हितकारी, मोते कछु ना सरो॥ १॥

विप्र सुदामा कियो अयाचक, तन्दुल भेट धरो ॥ २ ॥

द्रुपदसुता की तुम पति राखो, अम्बर दान करो ॥ ३ ॥

सन्दीपन के तुम सुत लाये, विद्या पाठ पढ़ो ॥ ४ ॥

सूर की विरियां निठुर होय बैठे, कानन मूंद धरो ॥ ५ ॥

महात्माओं के वाक्य

हे मेरे ईश्वर ! मेरे जीवन के लबालब भरे पात्र से तू कौनसा दिव्य रस पान करना चाहता है।

त्याग मेरे लिये मुक्ति नहीं है मुझे तो आनन्द के सहस्त्रों बंधनों में मुक्ति का रस आता है।

आदमी जितना आप बिगाड़ करता है उतना दूसरे नहीं कर सकते। जो कुछ हम आप सीखते हैं उसका असर दूसरों की सीख से बढ़ कर है।

उपदेश और अच्छी सलाह जहां से मिले आदर के साथ स्वीकार करो। देखो मोती सा अनमोल पदार्थ सीप जैसी तुच्छ वस्तु से निकलता है। जो अच्छी सलाह नहीं सुनता वह धिक्कार सुनेगा।

अर्थ सिद्धि की दो कुंजियां है बुद्धि और आशा संयुक्त उद्योग। बिना इनके आदमी संसार में बढ़ नहीं सकता।

किसी बात के निर्णय में जल्दी न करो पर जब समझ लिया तो दृढ़ संकल्प रहो करने के पूर्व उस काम की हानि लाभ भलि भांति मन में तोल लो फिर उसको करो परिणाम

चाहे जो हो।

किसी काम में हाथ डालने के पहले अपने पुरुषार्थ को तोल लो बहुत ऊंचे बढ़ जाने से गिर जाने का डर और बहुत नीचे पड़े रहने से कुचल जाने का भय होता है।

मालिक पर भरोसा करो पर ऊंट के पांव बान्ध कर रक्खो।

जिसने किसी काम को पूरा करने का प्रण ठान लिया वह उस को अवश्य कर लेगा।

कर्ता सब पशु पक्षियों को आहार देता है परन्तु उन की मांद में नहीं डाल आता।

धन की मिठास उसको मिलेगी जिसने उसकी कमाई में महनत की कड़वाई को चक्खा है।

किसी कठिन काम के करने में हिम्मत हार देना कायरता का लक्षण है। यदि उसे दूसरे कर सकते हैं तो तुम क्यों नहीं कमर कस कर तयार हो जाते ? कुल मालिक पर भरोसा अवश्य रक्खो जो सब उद्योग की जान है उस पर दृढ़ विश्वास रख कर आदमी असम्भव काम कर सकता है। असम्भव का शब्द केवल मूर्खों के कोष में मिलता है।

स्वतन्त्र और अनाधीन वही कहा जा सकता है जो अपने काम के लिये दूसरे का आश्रित नहीं है।

एक से एक मिलकर ग्यारह होते हैं परन्तु अलग रहने से एक का एक ही बना रहता है। पर याद रक्खो 'एका' नाम अच्छे और नीति संयुक्त कामों के लिये मिलने का है। नीति विरुद्ध कामों के लिये मिलने का नाम "गुट्ट है।

तैमूर लंग का कथन है कि यदि तुम प्रजा को आराम देना चाहते हो तो न्याय के खड्ग को आराम न लेने दो। न्याय में कोमलता मिली रहने से वह सोना और सुगन्ध होजाता है।

उमर भक्त ने किसो गुलाम से जो बकरी चराता था पूछा कि एक बकरी मेरे हाथ बेचेगा। उसने जवाब दिया कि बकरियों का मालिक दूसरा है मुझे तो इनके चराने का काम सुपुर्द है। इस पर उमर बोले कि इन का मालिक यहां तो नहीं देखता है उससे कह देना कि एक बकरी को भेड़िया उठा ले गया तब चरवाहे ने उत्तर दिया कि जो बकरी का मालिक नहीं देखता तो घट घट व्यापी मालिक तो देखता है।

यह सुन कर उमर रो पड़ा।

भलों का संग करो। कुसंग से बचो। बड़ों की आज्ञा पालन करना मनुष्य का धर्म है। बड़ों से लड़ना अपना अपघात करना है। बड़ों की सीख संसार का कीच में न फंसने के लिये लाठी का काम देती है समझदार को चाहिये की सदा बड़े का संग करे।

जो कोई अपनी उन्नति या कीर्ति चाहता है तो उसको इन अवगुणों से बचना चाहिये। अधिक सोना, औंघना, डर, क्रोध आलस्य और टालमटोल।

राज भक्ति का भारी दर्जा धर्म शास्त्र और नीति दोनों में है। राजा या बादशाह के द्रोही का लोक परलोक दोनों बिगड़ता है।

घमण्ड या अहंकार मूर्खता का चिन्ह है।

दूसरे की निन्दा नहीं करना, अपनी प्रशंसा नहीं सुहाती, दूसरे की प्रशंसा से हर्ष होता है, दूसरों को सुख पहुंचाना, छोटों से कोमलता और दया भावा, बड़ों से आदर सत्कार के साथ वर्तता है तथा खेल में भी किसी के साथ जो चालाकी नहीं करता वह महापुरुष है।

यूनान का फीसागोरस पुनर्जन्म में दृढ विश्वास रखता था उसने कहा कि मैं पहले जन्म में फौज का अफसर था और लड़ाई में मारा गया। उसके पता देने से एक कन्दिरा में जहां लड़ाई हुई थी उसके हथियार पड़े हुए मिले। इसी तरह अपने बहुत से चेलों के पिछले जन्मों का हाल बताया और लोगों को प्रत्यक्ष प्रमाण से निश्चय करा दिया।

मौलाना रूम ने फरमाया है कि मैं कितने ही जन्म भोग चुका हूं।

बुद्ध का उपदेशः-नौकरी बुद्धिमान की करो। मूर्ख से बचो। सज्जनों के पड़ोस में रहो। भली कामनाओं को मन में बसाओ और बुरी कामनाओं को निकालो। शान्त स्वभाव रहो। जब कोई दोष लगावें तो अपने मन को न बिगाड़ो सम्पत्ति में फूल न जाओ और विपत्ति में पिचक न जाओ। दूसरे का माल बेईमानी से लेने या दबा बैठने की नियत न करो। जिनसे तुम्हारा जी नहीं मिलता उनसे दूर रहो। किसी को कथनी या करनी से धोखा न दो।

पक्के धर्मी की बोली धीमी होती है क्योंकि जो अच्छे काम की कठिनता को जानता है वह अवश्य सम्भल कर

बोलेगा।

आदमी अपना दर्पण आप है। आपनी आंख आप खोलो नहीं तो कष्ट खोलेगा।

झूठी खबर न उड़ाओ। बुरे से मेल न करो। तुम्हारे शत्रु का बिचरा हुवा बैल तुम्हें मिले तो उस के घर पहुंचादो परदेशी को न सताओ। जब खेत काटो तो थोड़ा सा बटोही के लिये भी छोड़दो। अपने परोसी के साथ अत्याचार न करो। मजूर की मजूरी रात भर रोक न रक्खो। बहरे की ठठोली न उड़ाओ। अन्धे की राह में ठोकर खाने को ढेला न रक्खो। मुखबिरी न करो। चुगली न खाओ। अपने परोसी को बुरे काम करने से डाटो। किसी को छोटी निगाह से न देखो लग्न मुहूर्त का विचार मत करो।

बूढों का खड़े होकर सत्कार और सब प्रकार प्रतिष्ठा करो। धरती को बेच न डालो।

प्रेम आकर्षण या खैंच शक्ति का नाम है जिस से यह सब रचना ठहरी हुई है और मालिक आप प्रेम स्वरूप हैं अपने से बढ कर किसी को चाहना प्रेम है। जो अपने से बढ कर मालिक को चाहता है उस को तन मन धन अपने प्रीतम

पर वार देने में क्या शोच विचार होगा।

प्यारे! अगर तू न बोलेगा तो मैं अपने हृदय को मौन से भर लूगा, मैं चुप चाप पड़ा रहूंगा और तारों से भरी हुई रात्रि की तरह प्रतीक्षा करूंगा, तेरी वाणी की सुनहरी धाराएं आकाश को चीर कर नीचे की ओर बहेंगी।

लोग अपने विधि विधानों से मुझे जकड़ने के लिये आते हैं किन्तु मैं उन्हें टाल देता हूं क्योंकि मैं तो केवल प्रेम के कर कमलों में आत्म समर्पण करना चाहता हूं। मुझे आज नींद नहीं, रह २ कर मैं द्वार खोलता हूं और अंधेरे में बाहर की ओर देखता हूं मैं विस्मित हूं कि तेरा रास्ता किधर है। दुःख रूपी दूत तेरे द्वार को खटखटा रहा है। उसका संदेश है कि तेरा स्वामी जगता है और रात्रि के अन्धकार में वह तुझे प्रेमाभिसार के लिये बुला रहा है। वह ऐसे समय आया जब रात्रि का सन्नाटा था। वह मेरे इतने नज़दीक आता है कि जिस की श्वास मेरे शरीर में लगती है।

मेरा छोटा हृदय उन के हाथों के अमृतमय स्पर्श से अपने आनन्द की सीमा को खो देता है और उस में ऐसे उद्गार उठते हैं कि जिनका वर्णन नहीं हो सकता।

संसारी जनों का प्रेम मुझे सब तरह से बान्धने का यत्न करता है और मेरी स्वतन्त्रता को छीन लेता है परन्तु तेरा प्रेम जो उन के प्रेम से बढ़ कर है निराला है वह मुझे दासता की श्रृंखला में नहीं बांधता किन्तु मुझे स्वतंत्र रखता है।

तीन बात जितनी बढ़ाओगे बढ़ेंगी। भूख नींद और डर।

तीन की महिमा तीन जानते हैं। जवानी की बूढ़े, आरोग्यता का रोगी और धन की निर्धन।

तीन बातों से बचो सब तुम्हें पसन्द करेंगे। किसीसे कुछ न मांगो, किसी को बुरा मत कहो, और किसी के महमान के बिना बुलाए बुछलग्गू न हो।

तीन के बिना तीन नहीं रहते। धन बिना वाणिज्य के, विद्या बिना शास्त्रार्थ के और राज्य बिना शासन के।

बूढ़ों का आदर करना, छोटों को सलाह देना, बुद्धिमानों से सलाह लेना, मूर्खों के साथ न उलझना।

चार तरह के आदमी होते हैं मक्खी चूस, कंजूस उदार और दाता। जो न आप खाय न दूसरे को दे वह मक्खी चूस, आप खाय पर दूसरे को न दे वह कंजूस, आप

भी खाय और दूसरों को भी दे वह उदार और जो आप न खाय परन्तु दूसरों को दे वह दाता कहलाता है। यदि दाता नहीं बन सकते तो उदार तो अवश्य ही होना चाहिये।

संकट में मित्र की, रण में शूर की, ऋण में साहू की टोटे में स्त्री की और रोग शोक में नाते दारों की पहचान होती है।

खुशी, रंज, रोजी, मौत यह चार अपने आप आती हैं।

चार जाकर फिर नहीं आती, छूटा हुवा तीर, मुंह से निकली बात, बीती हुई उमर और टूटा हुवा दिल।

जो आके न जाय वह बुढापा देखा।
जो जाके न आय वह जवानी देखी॥

चार चीजें पहले निर्बल दीखती हैं और आगे जोर दिखलाति है। शत्रु, आग, रोग और ऋण।

पांच के संग से बचना चाहिये झूठा, मूर्ख कञ्जूस, डरपोक और दुष्ट।

मैं आकारों से समुद्र में इस आशा से गहरी डुबकी मारता हूं कि निराकार का पूर्ण मोती मेरे हाथ आजाय।

मैं अपने जीवन भर अपने गीतों के द्वारा तुझे ढूंढता रहा हूं। अब मैं उत्सुक हूं कि मर कर अमरत्व में लीन हो जाऊं।

मैं तेरी कथाओं को अमर गीतों में प्रकट करता हूं और तेरा रहस्य मेरे हृदय से निकल पड़ता है।

मैं तुझे तेरी जीत को भेटों और अपनी हार के हारों हारों से अलंकृत करूंगा।

जीवन रूपी नौका की पतवार को जोड़ते समय में जानता हूं कि अब तू इसे अपने हाथ में ले लेगा।

नीलाकाश से एक आंख मेरी ओर देखेगी और इशारे से चुपचाप मुझे अपनी ओर बुलाएगा।

जब मैं यहां से बिदा होऊं तब मेरे अन्तिम बचन यह हों, कि मैंने जो कुछ देखा है उस से बढ़ कर और कुछ नहीं हो सकता।

जब मां बच्चे को दाहने स्तन से छुड़ाती है तो वह चौंकता है और दूसरे क्षण में ही जब वह उसे बांया स्तन देती है तब उसे आश्वासन होता है।

मुझे उस समय की कोई खबर नहीं जब मैंने पहिले पहल इस जीवन में प्रवेश किया था।

जब प्रातःकाल मैंने आकाश को देखा तो मुझे उसी क्षण मालूम हुआ कि मैं इस जगत् में कोई अपरिचित जन नहीं हूं और उस नाम रूप रहित अज्ञेय शक्ति ने मेरी मां का

रूप धारण कर मुझे अपनी गोद ले लिया है. हे मेरे मित्रो! अब मेरे जाने की बेला है। तुम सब मेरे लिए शुभ कामना करो। आकाश हवा से रक्त वर्ण हो रहा है और मेरा मार्ग सुहावना है। मैं अपनी यात्रा पर खाली हाथ और आशा पूर्ण हृदय के साथ जाता हूं।

मुझे छुट्टी मिल गई है। ऐ मेरे भाइयो! मुझे विदा करो मैं तुम सब को प्रणाम करता हूं। मेरा बुलावा आया है और मैं यात्रा के लिए तयार हूं।

मैं जो कुछ हूं, मेरे पास जो कुछ है, मैं जो कुछ आशा करता हूं, और मेरा प्रेम यह सब गम्भीर रीति से सदा तेरी ओर प्रवाहित होते रहे हैं। मेरे ऊपर तेरे नयनों का अन्तिम कटाक्ष पड़ते ही मेरा जीवन सदा के लिए तेरा होजायगा।

पुष्प पिरो लिए गए हैं, वर के लिए माला तयार है मृत्यु पश्चात्, वधु भक्त अपने घरसे विदा होगी और अपने स्वामी से शून्य रात्रि में अकेली मिलेगी।

जब मृत्यु मेरे द्वार को खटखटायेगी तब अपने प्यारे अतिथि के आगे जीवन का भरपूर पात्र रख दूंगा। उसे खाली हाथ न जाने दूंगा।

प्रवीण शिल्पी अनेकों प्रतिमायें बनाते हैं। जब उनका समय आजाता है तब वे विस्मृति की पवित्र धारा में विसर्जन करदी जाती हैं।

वसन्त की मन्द २ वायु रह रह कर तेरे निर्जन भवन

में उन फूलों के समाचार लाती है जो पूजा में तुझे नहीं चढ़ाये जाते।

मैं तेरे सन्ध्यागमन के सुनहरे शामयाने के नीचे खड़ा हूं। और अपने उत्सुक नयनों को तेरे मुखारविन्द की ओर उठाता हूं।

हाथ जोड़ कर अश्रु जल से मैं उस की पूजा करूंगा और अपने हृदय के रत्न को उस के चरणों में अर्पण करूंगा।

हे प्रभु! तेरे हाथ में अनन्त समय है हमारे पास वृथा नाश करने के लिए तनिक भी समय नहीं है इस लिए हमें अपने अवसरों और सफलताओं के लिए छीना झपटी करनी चाहिए।

हम इतने दरिद्री हैं कि विलम्भ नहीं कर सकते। झगड़ा करने वालों के साथ झगड़ा करने में मेरा समय निकल जाता है। तेरी वेदी अन्त तक शून्य पड़ी रह जाती है। दिन समाप्त होने पर डरता हूं कि कहीं तेरा द्वार बन्द न हो जाय। पर ज्ञात होता है कि अभी समय बाकी है।

मेरे जीवन के प्रत्येक क्षण का नियन्ता तू है। सब के भीतर रह कर तू बीजों में अंकुर, कलियों में फूल और फूलों में फल उत्पन्न करता है।

१-भाषा फक्किका प्रकाश प्रथम खण्ड ।

इस पुस्तक में सिद्धान्त कौमुदी की फक्किकाओं को विस्तार पूर्वक सरल रीति से समझाया गया है। १५० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य ॥)

२-ज्ञान धर्मोपदेश इस पुस्तक में वेद और वेदान्त का सार संग्रहीत है अन्त में उत्तम कवितायें हैं। मूल्य -)॥

३-वेदोपनिषद् इस पुस्तक में पांच उपनिषद् तथा चारों वेदों से उत्तम २ मन्त्रों का अर्थ सहितसंग्रह है। मूल्य ।-)

४-श्रीमद्भगवद्गीता प्रथम भाग इस पुस्तक में १० अध्याय हैं प्रथम मूल है पश्चात् अन्वय और भाषा टीका है। अन्वय को इतना सरल बनाया गया है कि प्रत्येक पुरुष पढ़ और समझ सकता है। मूल्य केवल ।-)

भगवद्गीता संस्कृत तथा भाषा टीका सहिता।

इस पुस्तक में प्रथम मूल है तत्पाश्चात् अन्वय तथा सरल संस्कृत में प्रत्येक मूल के पर्याय हैं फिर सरल हिन्दी भाषानुवाद है। यह गीता के जिज्ञासु तथा कथक्कड़ों के बहुत ही लाभ की पुस्तक है पृष्ठ संख्या ४२८ होने पर भी हमने भक्त जनों के हितार्थ मूल्य केवल ॥=) ही रक्खा है शीघ्रता कीजिये केवल ८०० ही प्रतियां शेष हैं जिनके अति शीघ्र ही निकल जाने की आशा है।

ॐ

शब्द संग्रह

प्रकाशक।

भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा रेवाड़ी।

१७ वीं आवृत्ति	सं०	मूल्य
१०००	१९८३	

नम्र निवेदन ।

मेरे प्यारे बन्धुवर्ग! यदि आप स्वयँ सुख और शान्ति चाहते हैं और संसार को सुखमय व शान्त बनाना चाहते हैं तो उस कल्याण कारिणी भक्ति का आचरण कर संसार में भक्ति फैलाने का प्रयत्न करो । जिस भक्ति में मग्न होकर ऋषि मुनि नृत्य करते थे, जिस भक्ति के बल से भगवान् राम और कृष्ण ने संसार को स्वर्ग बना दिया था उस का रस पान करने और कराने के लिये उन ऋषि, मुनि महात्मा. ओं के बनाए गीत गाओ और उन गीतों को फैलाओ । मोक्ष में भक्ति से बढ़ कर कोई साधन नहीं है और उपासना में गाने से बढ़ कर कोई तरीका नहीं है । देश के नर नारी और बालक यदि प्रेम में मग्न हो कर भगवान के गीत गावेंगे तो भगवान अवश्यमेव मनवांछित फल प्रदान करेंगे ।

इति शुभम् ।

ॐ

ओं तत्सत् परब्रह्म परमात्मने नमो नमः।
श्री सच्चिदानन्दानन्त स्वरूपाय नमो नमः॥

शब्द संग्रह।

मंगलाचरण।

दो०– नमो नमो गोविन्द गुरु विनवौं अभिजन,सोय।
पहिले भये प्रणाम तिन, नमो जो आगे होय॥
नमो नमो श्रीराम जू सत् चित् आनन्द रूप।
जेही जानत जग स्वप्नवत् नाशत भ्रम तम कूप॥

शब्द

ओं निरंजनं दुःख भंजनं ररंकार ओंकार।
सत्य पुरुष सोऽहं तुही अलखं सर्वा धार॥

ओं निरंजन ररंकार प्रभु, सोऽहं सत्य नाम कर्तार।
अच्युत गुरु गोविन्द दातार, परमानन्द रूप निरधार॥टेक॥
एक अखण्ड ज्ञान भण्डार, तुमरी ज्योति का उजियार।
मैं मैं मैं पन सर्वाधार, नेति नेति कर वेद उचार॥॥१

एक आत्मा अपरम्पार, शंकर ब्रह्म सब का सार।
ओत प्रोत सब में निरंकार, जीवन प्राण आप ओंकार ॥२॥
हरि नारायण अग्नि तार, देव देव मैं कर हूं पुकार।
कृष्णानन्ता चलहं गौड़ हुं, फट अल्ला सब पसार ॥३॥
विनवों तुम को बारम्बार, प्रीतम प्यार करो उद्धार।
तद्धन गणपति नैनमंझार होवे अनन्त तुम्हें नमस्कार ॥४॥

शब्द

हरि नारायण हरि नारायण, नारायण हरि ओम् २ ॥१
भव दुःख हारण सब सुख कारण पतित उधारण प्रभु ओम् २
शुद्ध सच्चिदानन्द स्वरूपा अगम अरूपा शिव ओम् २ ॥२
निगम निरूपा सुर नर भूपा ज्योति स्वरूपा प्रभु ओम् २॥३॥
अनन्त अपारा पार न वारा निराधारा हरि ओम् २ ॥४॥
ब्रह्म विकाश स्वयं प्रकाश जगन्निवास स्वामी ओम् २॥५
राम गोविन्द परमानन्द कृष्णमुकुन्द गुरु ओम् २ ॥६॥

शब्द

भजो राधे कृष्णा राधेकृष्णा राधे गोविन्द ॥टेक॥
केशो जी कल्याण गिरि धरण छबीले लाल।
नन्द नदन श्री वृन्दावन चन्द ॥१॥
देवकी को छैय्या बलभद्र जी को भय्या लाल।

श्री भगवद्भक्ति आश्रम से प्रकाशित पुस्तकें।

१ भाषा फक्किका प्रकाश प्रथम खण्ड।

इस पुस्तक में सिद्धान्त कौमुदी की फक्किकाओं को विस्तार पूर्वक सरल रीति से समझाया गया है। १५० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य ॥)

२ ज्ञान धर्मोपदेश।

इस में सब वेदों तथा वेदान्त का सार संग्रहित है अन्त में उत्तम कवितायें हैं। मूल्य -)॥।

शब्द सदाचार संग्रह।

इस पुस्तक में अच्छे २ महात्माओं के उत्तम शब्दों का संग्रह है। मूल्य -)।

४. वेदोपनिषद्।

इस पुस्तक में पांच उपनिषद् तथा चारों वेदों से उत्तम २ मन्त्रों का संग्रह अर्थ सहित है। मूल्य ।-)

५. अष्टोत्तरशत मन्त्र माला॥

इस पुस्तक में उपनिषदों तथा गीता से अहंग्रह उपासना के उत्तम श्लोकों का संग्रह अर्थ सहित है। मूल्य -)

सत्य शब्द संग्रह मूल्य ।=) तथा गीता का सरल संस्कृत में अन्वय शीघ्र ही प्रकाशित होने वाले हैं॥

मैनेजर

"भक्ति प्रेस" भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा (रेवाड़ी)

यह पुस्तक श्रीमति रानीजी साहिवा निहालकोर पत्नी श्रीमान् लेफटैनैंट राव वहादुर राव बलबीरसिंह जी ओ. बी. ई. ने निज व्यय से छपवाई।

मुद्रकः- भूमानन्द ब्रह्मचारी भक्ति प्रेस भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा रेवाड़ी।

ॐ

भगवद्भक्तिः कर्तव्या जन्मतो मरणावधि ।
भक्त्या ज्ञानं स्वयं लब्धमितिवेदानुशासनम् ॥

* शब्द सदाचार संग्रह *

प्रकाशक

भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा (रेवाड़ी) प्रांत पंजाब

प्रथमावृत्ति २००० } सन १६२६ { मूल्य =)।

ओ३म्

* विज्ञान का चर्खा *

मंगलाचरण ।

श्री गुरु परमानन्दं बन्दे स्वानन्द विग्रहम् ।
यस्य सानिध्य-मात्रेण चिदानन्दायते तनुः ॥
ओंकार मंगल सदा विनवौं बारम्बार ।
परमानन्द सरूपं निज ज्ञानं दातार ॥
मो नमो गोविन्द गुरु विनवो अभिजन सोय ।
प्रहले भये प्रणाम तिन नमो जो आगे होय ॥
ो नमो श्री राम जू सत् चित् आनन्द रूप ।
जेहि जानै जग स्वप्नवत् नाशत भ्रम तम कूप ॥
सी देहु उदारता करि करुणा प्रभु मोहि ।
सनकूं देखूं एक सम कभी न भूलूं तोहि ॥
ारायण दो बात को दीजै सदा विसार ।
करो बुराई और ने आप कियो उपकार ॥

सदाचार ।

मैत्री सद्भि समं कुर्यात् स्नेहं सत्सु तु सर्वथा ।
संसर्गं साधुभिः कुर्यादसत्संसगं परित्यजेत् ॥ १ ॥

श्रेष्ठ मनुष्यों के साथ मित्रता करे, उन के ऊपर सब प्रकार से स्नेह रक्खे और मन बचन तथा कर्म से संसर्ग भी उन्ही का करै और नीच मनुष्यों का संग सब प्रकार से छोड़ दे ॥ १ ॥

सेवेत देव भूदेव बृद्ध वैद्य नृपा तिथीन् ।
विमुखान्नार्थिनः कुर्यान्नावमन्येत कानपि ॥२॥

देव, ब्राह्मण, राजा, वृद्ध, वैद्य तथा अतिथी लोगों की सेवा करे, याचक को निराश कर खाली न जाने दे । किसी की अवज्ञा न करे ॥ २ ॥

गुरुणां सन्निधौ तिष्टेत्सदैव विनयान्वितः ।
पाद प्रसारणादीनि तत्र नैव समाचरेत् ॥३॥

गुरू (पूज्य) लोगों के पास सदा नम्रता पूर्वक बैठे, उन के पास पाव पसार कर बैठना आदि अयोग्य कार्य न करे ॥ ३ ॥

अपकार परेऽपि स्यादुपकार परः पुमान् ।
आत्म वत् सकलान्पश्ये द्वैरिणो दूरतो वसेत् ॥४॥

अपकार करने वाले मनुष्यों के साथ भी सदा उपकार करे। सब को अपने सदृश जाने और द्वेषी से दूर रहे ॥ ४ ॥

न किञ्चिदात्मनः शत्रूनात्मानं कस्यचिद्रिपुम् ।
प्रकाशयेन्नापमानं न च निः स्नेहतां प्रभो ॥५॥

कोई मनुष्य हमारा वैरी है अथवा अमुक मनुष्य का मैं वैरी हूं ऐसा किसी प्रकार प्रकाशित न करे। किसी स्थान में अपना अपमान हुआ हो और अपने ऊपर स्वामी का स्नेह न हो इस को भी प्रकाशित न करै ॥ ५ ॥

नात्मानमुदके पश्येन्न नग्नः प्रविशेज्जलम् ।
तथा नाज्ञातगाम्भीर्यं न हिंस्र प्राणि सेवितम् ॥६॥

पानी में अपना प्रतिबिम्ब न देखै, नग्न हो कर जल में न घुसे। जिस की गहराई विदित न हो तथा जिस जल में मच्छादि हिंसक जीव रहते हों उस में न घुसै ॥ ६ ॥

काले हितं मितं सत्यं संवादि मधुरं वदेत् ।
भुञ्जीत मधुरं प्रायं स्निग्धं काले हितं मितम् ॥७॥

बोलने के समय थोड़ा, हितकारी, सत्य, प्रसङ्ग के अनुसार और मिष्ठ बचन बोले। भोजन के समय अधिक रस वाले घी सहित और हितकारी पदार्थों का प्रमाणानुसार भोजन करै ॥ ७ ॥

न रात्रौ दधि भुञ्जीत न च निर्लवणं तथा ।
न मुद्ग सूपं ना चौद्रं न चाप्यघृत शर्करम् ॥ ८ ॥

रात्रि में दही न खाय, और बिना नमक के दही कभी नहीं खाय, तथा मूङ्ग की दाल,शहद, घी और शर्करा के बिना भी दही नहीं खाय ॥ ८ ॥

जनस्याशयमालक्ष्य यो यथा परि तुष्यति ।
तं तथैवानुवर्तेत परा राधनपंडितः ॥९॥

मनुष्यों के अभिप्राय को जान कर जो मनुष्य जिस प्रकार से प्रसन्न हो उसी प्रकार प्रवर्ते क्योंकि अन्य मनुष्यों को प्रसन्न रखना ही चतुरता है ॥ ९ ॥

नैकः सुखी न सर्वत्र विश्वस्तो न च शंकितः ।
नोद्यमे विरमेत्कापि हेतावीर्ष्येत्फले न तु ॥१०॥

जिस प्रकार सहाय बिना मनुष्य सुखी नहीं होता उसी प्रकार सब के ऊपर विश्वाश करने वाला अथवा सब के ऊपर सन्देह रखने वाला भी मनुष्य सुखी नहीं होता कभी उद्यम करने से खाली नहीं बैठना चाहिये किसी के सफली भूत उद्यम को देख कर उस पर ईर्ष्या करना नहीं चाहिये जो पुरुष ऐश्वर्यवान् के ऐश्वर्य को देख कर दुःख मानते हैं वे सदैव दुखी रहते हैं विद्वानों को यह बिचार करना चाहिये कि अमुक पुरुष को किस प्रकार और किस चतुरता से यह ऐश्वर्य प्राप्त

हुआ है उसी विद्या और उसी उपाय से हम भी धन उपार्जन करके संसार में अपना यश प्रकाश करें परन्तु चतुर जन किसी के संचित किये हुये धन की इच्छा न करें ॥ १० ॥

वेगान्न धारयेज्जातु मनो वेगान्वि धारयेत् ।
न पीड़येदिन्द्रियाणि नचैतानति लालयेत् ॥ ११ ॥

मल मूत्र अथवा अपान वायु आदि के वेगों को कदापि नहीं रोके किन्तु काम क्रोधादिक मन के वेगों को रोकना चाहिये इन्द्रियों को पीड़ित नहीं करे और उन का बहुत लाड भी न करे ॥ ११ ॥

वर्षातपादिषु च्छत्री दण्डीरात्रौ भयेषु च ।
सोपानत्कस्तनुं रक्षेद्विचरे द्युगमात्रदृक् ॥ १२ ॥

वर्षा अथवा धूप आदि में छत्र (छत्री) धारण कर चले रात तथाभय के समय हाथ में लकड़ी लेकर चले जूते पहरे रहे और देह की रक्षा करे आगे को चार हाथ पृथ्वी देख कर चले ॥ १२ ॥

नदींतरेन्न वाहुभ्यां नाग्नि स्कंध माभि व्रजेत ।
सन्दिग्धनावं वृक्षं च नारोहेतदुष्ट यानकम् ॥ १३ ॥

हाथों से नदी को नहीं तरे जहां अग्नि का समूह हो वहां नहीं जाय सन्देह युक्तवाहन पर नहीं चढ़ैं और उन्मत्त हाथी के पास नहीं जाय ॥ १३ ॥

नासंवृतमुखं कुर्यात् सभायां च विचक्षणः ।
कासंश्वासं तथोद्गारं जृम्भणं क्षवथुं तथा ॥१४॥

श्रेष्ठ मनुष्यों की सभा में सन्मुख मुख करके खांसी, श्वास, डकार, जम्भाई, और छींक नहीं लेवे ॥ १४ ॥

नासिकां नविष्कुर्णीयान्नासीतोत्कटकः क्वचित् ।
नोर्ध्वं जानुश्चिरं तिष्ठेन्न नखेन लिखेद्भुवम् ॥१५॥

सभा में बैठ कर कभी नाक को नहीं कुरेदे उकरू कभी नहीं बैठे क्योंकि इस प्रकार से बैठना हानि कारक है एक समय एक प्रतिष्ठित अंगरेज़ से पूछा कि तुम लोग नीचे को पैर लटका कर शौच क्यों जाते हो तो उन्हों ने उत्तर दिया कि "ऊकरू बैठ कर जाने में मनुष्य का दिमाग़ कमजोर होता है यह बात साइंस ने भी सिद्ध कर दी है"। हमारे हिन्दू वैदिक ग्रन्थों में भी यह बात लिखी है अतः ऊकरू बैठ कर शौचादि जाना हानि कारक है। अधिक देर तक घुटुएँ ऊचे करके नहीं बैठे और नखों से पृथ्वी कभी न खोदे॥ १५ ॥

सम्मार्जनीरजो नैवदेहे दद्यत्कदाचन ।
न नखेन तृणंछिन्द्यान्नाच्छिष्टो ब्राह्मणं स्पृशेत् ॥१६॥

शरीर पर कभी बुहारी की धूल न पड़ने देवे नख से तृण को नहीं तोड़ै झूठे मुख ब्राह्मण को स्पृश न करे ॥१६॥

नोपरक्तं न चोद्यन्तं नास्तं यातंदिवाकरम् ।

सर्वथा न समीक्षेत न जले प्रतिबिंबितम् ॥१७॥

राहू से ग्रसित (ग्रहण के समय) उदय होते और अस्त होते समय सूर्य को न देखे पानो में सूर्य का प्रतिबिम्ब पड़ा होय उस को न देखे ॥ १७ ॥

नेक्षेत सततं सूक्ष्मं दीप्ता मेध्यांप्रियाणि च ।

पौरन्दरं धनुर्नैव दर्शयेत्कमपिकचित् ॥ १८॥

सूक्ष्म प्रकाश युक्त अपवित्र और अप्रिय वस्तु को निरन्तर नदेखै ।आकाश में इन्द्र का धनुष तना होय उस को किसी समय भो किसी को नहीं दिखावे ॥ १८ ॥

नेच्छेद्बलवतायुद्धं न भारं शिरसावहेत् ।

गात्रं नादयेत्केशान् हस्तेन धुनुयान्न च ॥१९॥

बलवान के साथ लड़ाई करने की इच्छा नही करे, बोझ शिर पर न उठावे क्योंकि मस्तक पर बोझ उठाने से उस का असर दिमाग़ पर बुरा पड़ता है। यह बात अपने शास्त्रों में निषिद्ध है । भारत वर्षीयों ने अंगरेजों की कोट पतलून आदि बुरी बातों का तो अनुकरण किया है जो कष्ट देने वाली हैं। और टोप आदि जो लाभ दायक वस्तुयें हैं उन का नहीं किया टोप के पहनने से आंखों से सूर्य का चौंध नहीं पड़ता इस लाभ के सिवाय यह भी एक और बड़ा लाभ है कि जो हमारे ग्रन्थों में लिखा है कि शिर पर बोझ न उठावे वह

बात भी पूर्ण होती है क्योंकि साफा आदि बान्धना शिर पर बोझ रखने में सहायक होता है और टोप बाधक। जब टोप पहनेंगे तो आप ही शिर पर बोझ नहीं रखा जा सकेगा। हाथ इत्यादि ठोक कर शरीर का शब्द न करै हाथों से केशों को नहीं हिलावे ॥ १६ ॥

नगच्छेत्पूज्ययो र्मध्ये दम्पत्योरन्तरेण च।
रिपोरन्नं न भुञ्जीत गणिकान्नमपि क्वचित् ॥२०॥

दो पूज्य मनुष्य अथवा स्त्री पुरुष खड़े होय उन के बीच में हो कर नहीं जाय शत्रु अथवा वेश्या का अन्न कदापि नहीं खाय ॥ २० ॥

प्रतिभू न भवेत्क्वापि न च साक्षी वृथाभवेत्।
न्यासं न धारयेज्जातु द्युतं दूरात्परित्यजेत् ॥२१॥

किसी समय भी किसी का प्रतिभू नहीं बने किसी का वृथा साक्षी न होय। किसी की धरोहर न रक्खे और जहां जुआ होता हो उस को दूर ही से छोड़ देवै ॥ २१ ॥

विश्वासं नाचरेत्स्त्रीणां ताः स्वतंत्रा न चारयेत्।
रक्षणीया सदा यत्नाद्यौवने तु विशेषतः ॥२२॥

स्त्रियों का विश्वास कदापि नहीं करै, स्त्रियों को स्वतन्त्र नहीं रक्खे अधिक प्रयत्न से स्त्रियों की रक्षा करे उस में भी युवावस्था में विशेष रूप से रक्षा करनी चाहिये ॥२२॥

नाभिन्ने शयने स्वप्यान्नानेक विवरेऽपि च।
नैको देवालये नैव रात्रौ तरुतलेऽपि च ॥२३॥

स्त्री को अलग शय्या पर न सुलावे पुरुष के स्थानों में स्त्री को न रक्खे और छिद्रों वाली फटी टूटी शय्या पर शयन न करे रात्रि को देव मन्दिर में अथवा वृक्ष के नीचे अकेला न सोवे ॥ २३ ॥

मूत्रोच्चार समुत्सर्गं दिवा कुर्यादुदङ्मुखः।
दक्षिणाभिमुखो रात्रौ सन्ध्ययोश्च यथादिवा ॥२४॥

दिन में मल मूत्र का त्याग उत्तराभिमुख हो कर करै और रात को दक्षिण में मुख करके और दोनों सन्ध्याओं में दिन की भांति करें ॥ २४ ॥

छायायामन्धकारे वा रात्रवहनि वा द्विजः।
यथा सुखं मुखः कुर्यात् प्राण बाधा भयेषु च ॥२५॥

छाया में वा अन्धेरे में चाहे रात हो वा दिन जिधर इच्छा हो मुख करे। तथा प्राणों को बाधा के भय में यथेच्छ मुख करके बैठे ॥२५॥

एवं दिनानि गमयेत्सदाचारपरः सदा।
रात्रौ रात्रि प्रयुक्तानि कुर्य्यात्कर्माणि मानवः ॥२६॥

इस प्रकार सदाचार में तत्पर रह कर दिन व्यतीत करे और रात्रो को रात्री के समयानुकूल कार्य्य करे ॥ २६ ॥

इत्याचारं समासेन भाषितं यः समाचरेत् ।
सर्विदंत्यायुरारोग्यं प्रीति धर्मं धनं यशः ॥ २७ ॥

संक्षेप से यह जो सदाचार कहा उस के अनुसार जो मनुष्य आचरण करता है उस को आयु आरोग्यता प्रीति धर्म और यश की प्राप्ति होती है ॥ २७ ॥

सत्योपदेश ।

१. हे सच्चिदानन्द स्वरूप, सर्व शक्तिमान, सर्व हृदयान्तरगत, सर्व व्यापक प्रभो यदि मैं तुझ को यहां आत्मा में नहीं पासका तो किस जगह पा सकूंगा।

२. सृष्टि के सकल पदार्थ एक विशेष आदर्श की ओर जाते हुवे दीखते हैं।

३. मनुष्य जीवन के प्रति विभाग में हम को प्रतीत होता है कि हर एक क्रिया किसी विशेष आदर्श की ओर है।

४. जड़ पदार्थ ऐसी क्रिया नहीं कर सकते अतः हम इस परिणाम पर पहुंचते हैं कि यह सकल पदार्थ किसी चैतन्य अधिष्ठात्री शक्ति की आज्ञानुसार बिचरते हैं।

५. ब्रह्माण्ड के सकल पदार्थ उच्च स्वर से पुकार रहे हैं कि परमात्मा विद्यमान है।

६. संसार की सुन्दर वस्तुएँ एक विशेष सौन्दर्य की सत्ता की साक्षी हैं।

७. प्रत्येक मधुर वस्तु अत्युत्तम मधु को दर्शाती है।

८. हरेक पवित्रता उस पवित्रता के स्रोत को दर्शाती है।

९. जो अन्य पदार्थों के सौंदर्य और उत्तमता का स्रोत है उसी को परमात्मा कहते हैं।

१०. ईश्वर परिपूर्ण है वह अनन्त है, वह ज्ञान स्वरूप है।

उस का ज्ञान अनुमान नहीं वरञ्च प्रत्यक्ष है।
११. ज्ञान के अतिरिक्त उस में कृति भी है।
१२. इस कृति के कारण वह अपनी भलाई को दूसरों तक पहुंचाता है और मनुष्यों को अपने स्वरूप में घड़ता है।
१३. भगवान् में ज्ञान और कृति ही नहीं वरञ्च प्रेम भी है।
१४. प्रेम की तुलना इसी से हो सकती है कि प्रेम के विषय में कितनी नेकी है।
१५. वह प्रेम स्वरूप है।
१६. जो कुछ हम अनुभव करते हैं जो कुछ हमारे दृष्टि गोचर होता है वह इसी ईश्वर का विकाश है जो आप छिपा हुवा है।
१७. सारे पदार्थ भगवान् का शब्द हैं और बोलते हैं।
१८. प्रत्येक वस्तु ईश्वर से परिपूर्ण है।
१९. जब कभी हम किसी वस्तु से प्यार करते हैं तो उस के आभ्यन्तर वास करने वाले भगवान् के कारण से करते हैं।
२०. प्यासा पुरुष जल की अभिलाषा इस लिये करता है कि जल में भगवान् निवास करता है।
२१. मनुष्य को बड़े से बड़ा आनन्द भले कामों के चिन्तन से होता है।
२२. भगवान् केवल उन से प्यार करता है जो अन्याय से घृणा करते हैं।

२३. मूर्ख एक ही अध्यापक से सीखते हैं और वह है विपत्ति।
२४. वह पुरुष जिस से सारे डरते हैं सब से डरता है।
२५. मेरे लिये कर्तव्य वह है जो मुझे भाता है।
२६. एक काम का करना ही पर्याप्त नहीं परन्तु आवश्यक है कि हम इसे सोच विचार कर करें।
२७. सदाचारी जीवन में सब से बड़ा धर्म यह है कि मनुष्य अपने आप को जाने।
२८. सच्ची तपस्या इन्द्रिय संयम और दम है।
२६. हमारे अन्दर देवासुर संग्राम हो रहा है। असुर प्रत्येक की अवस्था में विशेष दुर्बल अंश को ढूंढते हैं और उस पर प्रहार करते हैं।
३०. एक पुरुष की अवस्था में यह अंश काम दूसरे की अवस्था में क्रोध और तीसरे की अवस्था में कोई और अंश होता है।
३१. जो मनुष्य अपने आप को नहीं जानता वह अपने दुर्बल अंश को नहीं जानता और इन्द्रियों को वश में रखने के अयोग्य है।
३२. मनुष्य का सारा जीवन चेष्ठा का प्रकाश है।
३३. जब कभी हम चेष्टा करते हैं तो किसी त्रुटी को दूर करने के लिये करते हैं।
३४. त्रुटी दुःखों का मूल है।
३५. जब एक न्यूनता दूर होती है तो स्वभाविक एक नई

न्यूनता उत्पन्न हो जाती है।

३६. विषयों की तृप्ति से अपने आप को शान्त करना ऐसा ही सम्भव है जैसा घृत के छींटों से अग्नि को बुझाना।

३७. निर्वाण जीवन का आदर्श है।

३८. जीवन का उद्देश्य जीवन दीर्घ करना नहीं वरंच जीवन के बन्धन से मुक्त होना है।

३९. जगत में सुख से दुःख अधिक है और ज्यों ज्यों समय व्यतीत होता जाता है दुःख बढ़ता जाता है।

४०. यदि हम कबरों को ठोकर लगावें और मुर्दों से पूछें कि वोह जीवित होना चाहते हैं या नहीं तो वह शिर हिलादेंगे। (सोपन हायर)

४१. तुम इस प्रकार काम करो कि अपने काम के नियम को सर्वगत नियम बनाने की चेष्टा कर सको।

४२. हमारे काम का उद्देश्य किसी और उद्देश्य का साधन होने के स्थान में स्वयं साध्य होना चाहिये।

४३. इस तरह काम करो कि मनुष्यत्व तुम्हारी अपनी अवस्था में या किसी और की अवस्था में साधन की न्याई बर्ताव में न लाया जाय वरंच अन्तिम उद्देश्य समझा जाय।

४४. जो कुछ संसार में होता है वह भावो के आधीन है। ऐसी अवस्था में हम क्यों चिन्ता करें।

४५. अडोल चित्त होना, सिर आई को शान्ति से सहना,

भगवान् के साथ प्रेम करना यही जीवन का मुख्योद्देश्य है।
४६. ईश्वर की उपासना जन्म और प्रकृति की उपासना मरणहै।
४७. विद्या जीवन और अविद्या मृत्यु है।
४८. सत्य जीवन और झूठ मरण है।
४९. धर्म जीवन और अधर्म मरण है।
५०. परोपकार जीवन और स्वार्थ मरण है।
५१. पुरुषार्थ जीवन और आलस्य मरण है।
५२. ब्रह्मचर्य जीवन और व्यभिचार मरण है।
५३. सादापन जीवन और सजावट मरण है।
५४. एकता जीवन और विरोध मरण है।
५५. मित्रता जीवन और शत्रुता मरण है।
५६. वीरता जीवन और कायरता मरण है।
५७. सत्संग जीवन और कुसंग मरण है।
५८. संतोष जीवन और लोभ मरण है।
५९. अहिंसा जीवन और हिंसा मरण है।
६०. कृतज्ञता जीवन कृतघ्नता मरण है।

प्रत्येक मनुष्य जीवन से प्रेम रखता और मौत से डरता है, इस कारण उपरोक्त मौत के साधनों से घृणा करनी उचित है।

६१. एक परमात्मा को सर्वोपरि इष्ट देव मानना, उसी की

पूजा करना, सम्पूर्ण कर्म और जीवन का आधार समझना, उस के पवित्र नाम का गुप्त जप करना और उस पर पूण विश्वास रखना चाहिये।

६२ ईश्वर, जीव और माया शान्त अनादि हैं और ब्रह्म अनन्त अनादि है।

६३. मुक्ति अनन्त और अपार है। त्रिविधा दुःख की अत्यन्त निवृत्ति ओर परमानन्द की प्राप्ति रूप है।

६४. कर्मों के अनुसार उन्नति पूर्वक शुभाशुभ जन्म मानना चाहिये।

६५. अवतार, मूर्त्तिपूजा, तीर्थ, श्राद्ध आदि पुरानी बातों को जो बुद्धि के अनुकूल हों मानना चाहिये।

६६. वेद शास्त्र आदि सर्व प्रमाण ग्रन्थों की अच्छी बातों को जो बुद्धि के अनुकूल हों मानना चाहिये

६७. सर्व विद्या और समस्त पुस्तकों के पढ़ने में मनुष्य मात्र का अधिकार होना चाहिये।

६८ एक मनुष्य जाति है और जैसा करता है वैसा बनता है जन्म से कोई अच्छा बुरा नहीं होता। इस में जाति पांति ऊंच-नींच का कोई भेद न होना चाहिये।

६९ अध्यात्म विद्या में गीता उपनिषद् का नित्य पाठ करना चाहिये।

७०. आलस्य छोड़ कर आजन्म विद्याध्यन करना चाहिये।

७१. सब काम समय पर करना चाहिये।
७२. चार वार सन्ध्या करनी चाहिये।
७३. ईश्वर को और मौत को याद रखना चाहिये।
७४. भगवान के दर्शन करने के लिये योगाभ्यास करना चाहिये।
७५. देश, नरेश, महेश की भक्ति करनी चाहिये।
७६. सब मतों को, उन की पुस्तकों को, उन के अवतार तथा पीर पैग़म्बरों को और अन्य देशों के मनुष्यों को समान दृष्टि से देखना चाहिये। सब को अपना आप समझना चाहिये और परस्पर का भेद झूठा समझना चाहिये।
७७. प्यारा, हितकर, सच्चा और मधुर भाषण करना चाहिये।
७८. अपने घर पर आये हुवे अतिथि का यथायोग्य पूजन करना चाहिये।
७९. आपत्ति आने पर आनन्द में मग्न रहना चाहिये।
८०. अपने साथ में की हुई दूसरे की बुराई को और दूसरे के साथ में किये हुवे अपने गुण को भूल जाना चाहिये।
८१. सम्पूर्ण कर्मों का फल परमात्मा को अर्पण करना चाहिये।
८२. प्रारब्ध से पुरुषार्थ को बड़ा समझना चाहिये।
८३. बलवान की अपेक्षा निर्बलों को विशेष सुभीता देना चाहिये।

८४. मन वाणि और कर्म से सब को सुख पहुंचाना चाहिए।
८५. गौ रक्षा के लिये उत्तम नसल उत्पन्न करके दुधार बनाना चाहिये। और गोचर भूमि छुड़वाना चाहिये।
८६. विषयों के आधीन न होना चाहिये। अधिक उपाधि नहीं बढ़ानी चाहिये। सारासार का विचार करते रहना चाहिये। साधु सज्जनों के सत्संग में जाना चाहिये। अधिक संतान न बढानी चाहिये।
८७. जिसे अपने लिये चाहे उसे दूसरे के लिये करना चाहिये।
८८. हर काम सब की भलाई के लिये पवित्र आकांक्षा से करना चाहिये।
८९. दूसरों की बड़ाई सुन कर प्रसन्न होना चाहिये।
९०. पड़ोसी का मान आदर करना चाहिये।
९१. खान पान प्रेम और शुद्धताई के साथ मनुष्य मात्र का कर लेना चाहिये।
९२. दो बार हांडी का और एक बार चूल्हे का पका खाना चाहिये।
९३. मीठा भोजन दूसरे को खिला कर खाना चाहिये।
९४. मोटा खाना और मोटा पहरना चाहिये।
९५. बहुत भूख लगै तब खाना चाहिये और बहुत नींद आवे तब सोना चाहिये।
९६. सात्विक पदार्थ जो बुद्धि इत्यादि को बढावें भोजन

करना चाहिये ।

९७. विवाह स्वयंवर की रीति से जाति पांति के विचार बिना लड़का लड़की के परस्पर प्रेम होने पर उन की इच्छानुसार होना चाहिये ।

९८. एक पुरुष को एक ही स्त्री के साथ विवाह करना चाहिये आवश्यका होने पर दूसरी से भी । विवाह सम्बन्ध में जो पुरुष का अधिकार हैं वही स्त्री को भी होने चाहियें ।

९९. हर विषय में स्त्री पुरुषों के समानाधिकार होने चाहियें।

१००. स्त्रियों का आदर मान करना चाहिये और उन्हें प्रणाम करनी चाहिये । पैर की जूती समझने की अपेक्षा शिर का मुकुट समझना चाहिये । इस के स्मरणार्थ "गौरी शंकर सीता राम राधे श्याम श्यामा श्याम" इस मन्त्र का जप करना चाहिये ।

१०१. स्त्री को पतिव्रत धर्म और पुरुष को नारिव्रत धर्म पालन करना चाहिये ।

१०२. स्त्री पुरुषों को ऋतुगामी होना चाहिये ।

१०३. अच्छे २ लाभ दायक पूज्य उत्तम वृक्ष लगाने चाहिये । वृक्षों तथा औषधियों की नसल बढ़ा कर प्रभूत फल देने वाले बनाने चाहियें ।

१०४. तालाब कूंवा मन्दिर प्याऊ आदि बनवानें चाहियें ।

१०५. ब्याज थोड़ा लेना चाहिये ।

१०६. देश और धर्म के लाभ को विचारते हुवे व्यापार करना चाहिये।

१०७. दश दश पांच २ ग्रामों के मध्य में एक एक आश्रम बनाना चाहिये और वहां ही जंगल में लड़के लड़कियों की पाठशाला होनी चाहिये।

१०८. कभी २ नांचना ओर गाना भी चाहिये।

१०६. वृद्ध मां बाप की सेवा करनी चाहिये।

११०. मुकट दार टोपी तथा टोप पहनना चाहिये।

१११. बालकों को खेल के द्वारा विद्या सिखाना चाहिये।

११२. सब को बांसुरी बजाना चाहिये।

११३ ब्रह्म मुहूर्त्त में उठना चाहिये।

११४. किसी काम को अकेली ही न सोच कर दूसरे की सलाह करनी चाहिये।

११५. अपने पापों को प्रकट कर शुभ कर्मों को छिपाना चाहिये।

११६. ऋण से मुक्त रहना चाहिये।

११७. जैसे तुरत की व्याई गौ अपने बच्चे से प्यार करती है वैसे ही सब से वर्त्तना चहिये

११८. अपने लाभ में दसवां भाग पुण्य करना चाहिये।

११६. रात को मुंह उघाड़ कर सोना चाहिये।

१२०. रात को दक्षिण की ओर, दिन में उत्तर की ओर, ओर

दोनों सन्ध्याओं में उत्तर को मुख करके मलमूत्र का विसर्जन करना चाहिये।

१२१. एक हाथ से शिर खुजाना चानिये।

१२२. मनुष्य को अपनी स्वतन्त्रता से ऐसा धर्म स्वीकार करना चाहिए। जिस में प्रीति उत्साह निर्भयता होवे।

१२३. थोड़ा बोलना चाहिए और कभी २ मौन भी रखना चाहिए।

१२४. धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शान्ति शौच इन्द्रिय निग्रह करना चाहिए, सुखियों से मित्रता, दुःखियों पर दया, साधुवों के साथ मुदिता, और दुर्जनों के साथ उपेक्षा करनी चाहिए।

भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा।

यह आश्रम रेवाड़ी जंकशन से पश्चिम दिशा में लगभग एक कोस के अन्तर पर जंगल में अति पवित्र भूमि में बना है। जल की सुविधा के लिये पांच कूप और एक तालाब है। तालाब में पक्के घाट बनाये गए हैं। १०० बीघा भूमि में उपयोगी वृक्ष लगा कर उपवन बनाया गया है। आश्रम से लगी हुई ५०० बीघा भूमि गौओं के चरने के लिए श्री० लेफ्टी.

मेन्ट राव वहादुर राव बलबीर सिंह जी ने आश्रम को प्रदान की है।

इस आश्रम में एक ब्रह्मचर्याश्रम, कन्या पाठशाला या अछूत पाठशाला और अतिथियों व सत्संगियों के ठहरने का स्थान व पुस्तकालय है।

* ब्रह्मचर्याश्रम *

इस समय आश्रम में २७ ब्रह्मचारी हैं। यह प्राचीन ऋषियों की भांति गुरुजनों की सेवा व स्वावलम्बन का जीवन व्यतीत करते हुये विद्योपार्जन करते हैं इन का भोजन व रहन सहन इतना सादा है कि एक ब्रह्मचारी का समस्त खर्च ५) मासिक है। स्वावलम्बी इतने हैं कि इन्होंने एक ६५ फीट गहरा कूप स्वयं ही खोद लिया है। संस्कृत, देवनागरी, इत्यादि सब प्रकार की शिक्षा दी जाती है। व्याख्यान देना भी सिखाया जाता है।

कन्यापाठशाला—इनका जीवन भी बहुत सादा व तप का बनाया जाता है। संस्कृत, देवनागरी, गणित की शिक्षा इनको दी जाती है रामायण व गीता इनके मुख्य ग्रन्थ हैं।

अछूत पाठशाला में निकट वर्ती ग्रामों के बालक पढने आते हैं। अछूतों को आश्रम में रखनेका विचार हो रहा है। पुस्तकालय आरम्भिक अवस्था में है। धार्मिक ग्रन्थों

का साधारण संग्रह हुवा है, हां एकान्त शान्त स्थ
कारण यह छोटा पुस्तकालय भी बड़ा उपयोगी है। राम
आश्रम की भान्ति दादरी गढीबोलनी जोड़िया खेंटा
निखरी नूरगढ़ खोयरी पाल्म भटिण्डा आदि अन्य स्थ
भी आश्रम खोले गये हैं।

भूमानन्द ब्रह्मचारी के प्रबन्ध से "भक्ति प्रेस" श्री भगवद्भक्ति
आश्रम रामपुरा (रेवाड़ी) में मुद्रित।

* ओ३म् *

सार संग्रह ।

संग्रहकर्त्री—

सूरज देवी,

भगवद्भक्ति आश्रम

रामपुरा.

द्वितीयवार २५०० } संवत् १९९३ वि० { मूल्य प्रेम

भूमिका ।

उस परम दयालु भगवान को कोटिशः धन्यवाद् है जिसकी दया से मुझे आज इस पुस्तक के द्वितीय संस्करण की भूमिका सम्बन्धी कुछ शब्द लिखने का शुभ अवसर मिला है यह बड़े गौरव की बात है कि इसकी संग्रह-कर्त्री हमारी एक पूज्यनीय व आदरणीय भगनी है जो विदुषी, धार्मिका और सुशीला होने के अतिरिक्त आचार और त्याग की साक्षात् मूर्ती है। जिसने बालकपन से ही सांसारी सुखों को त्याग दिया है और अपना जीवन श्रीपरम पूज्य सद्गुरु भगवान के चरणोंमें अर्पण करके ब्रह्म-विद्याभ्यास में लगाया है। श्रीमती सूरजदेवी को जैसी उत्तम लेखन-शक्ति मिली है वैसे ही वक्तृत्व-शक्ति भी कम नहीं पाई है।

पुस्तक के सम्बन्ध में इतना कहना काफी है कि प्रथम तो यह उन पूजनीय महात्माओं की वाणियां हैं कि जिनके एक २ शब्द के श्रद्धा, भक्ति युक्त गान से जीवका इस संसार सागर से उद्धार हो सकता है फिर उनमें से भी यह सार-रूप हैं। इनका पूर्ण आनन्द तो वही प्राप्त कर सकेगा जो श्री सद्गुरु के चरणों का प्रसाद पाकर बार २ इनका मनन व

निदिध्यासन करेगा परन्तु जो मनुष्य एकवार भी इनको पढ़ेगा उसका अन्तःकरण अवश्य कुछ न कुछ पवित्र होगा और वह स्वयं अपने मन में आनन्द की तरङ्ग का अनुभव करेगा। आरम्भ में मंगलाचरण है पश्चात् गुरुभक्ति, भगवान के नाम की महिमा, ज्ञान, योग, भक्ति, वैराग इत्यादि अनेक विषयों पर श्लोक, अष्टक, दोहा, चौपाई, सवैया, सोरठा, भजन, कवित्त, कुण्डलियां, पद, ग़ज़ल, ख्याल सब प्रकार की कविता का आनन्द इसमें एक स्थान पर मौजूद है। अन्त में हमारी यह प्रार्थना है कि जो इस पुस्तक को पढ़ें उनको सद्गुरु के चरण कमलों में प्रीति हो और वह भगवान की भक्ति के अनुरागी होकर भवसागर से तरने के अधिकारी हों। पुस्तक के आरम्भ में श्रीसद्गुरु देव का उपदेश व भगवान की प्रार्थना है जिसके नित्य करने से मनुष्य का कल्याण होता है।

भगवद्भक्ति आश्रम,
रामपुरा
जन्माष्टमी १९७७

विनीत—
दिलीप घनस्थी

* ओ३म् *

* सद्गुरु का उपदेश *

ओ३म् तत्सत् परब्रह्मणेनमः ।।

समुद्र जब स्थिर रहता है तब उसे ब्रह्म कहते हैं और उसी समुद्र में जब लहर उठती है तब उसी को हम शक्ति या माया कहते हैं वही देश काल निमित्त स्वरूप है। सविशेष सगुण निर्विशेष निर्गुण उसके दो रूप हैं। पहिले रूप में वह ईश्वर जीव और जगत् है और दूसरे रूप में वह अज्ञात और अज्ञेय है। सर्व शक्तिमत्ता सर्वव्यापकता अनन्तदया उसी जगज्जननी जगदम्बा प्रेम रूपिणी भगवतीके गुण हैं। प्रत्येक व्यक्ति के पीछे अनन्त शक्ति विद्यमान है एक कणबिन्दू कृष्ण बुद्ध खीष्ट आदि और जगत् का विस्तार एक बिन्दु को प्रकाशित करता है एक आत्मा ब्रह्म भिन्न २ सर्व उपाधियों में प्रकाशित होता है। बड़प्पन की डींग दलबन्दी ईर्ष्यादि सदा के लिये छोड़ दो पृथ्वी की भांति सहिष्णु हो। लड़कपन की चञ्चलता और युवापन की गम्भीरता दोनों मिलाकर सबके साथ प्रेम से रहो।।

आत्मा के स्वरूप का व्यक्त और कभी अव्यक्त भाव होता है। आत्मा मानों बादलों से ढके हुए सूर्य की न्याई है। हृदय को समुद्र के समान महान् बना डालो, क्षुद्र भावों को पार कर जाओ, अमङ्गल के आने पर भी आनन्द में उन्मत्त होजाओ। संसार को एक चित्र की भांति देखो जगत् में कोई तुमको विचलित न कर सकेगा। अहन्ता को दूरकर दृढ़ता से खड़े होजाओ काम कांचन मान यश को छोड़कर ईश्वर को दृढ़ता से पकड़ो। विधि निषेधके घेरेमें पड़े रहनेसे आत्मा का प्रसार नहीं होता। जो जितनी ही आत्मानुभूति का प्रकाश कर सकता है उसके उतने ही विधि निषेध कम होजाते हैं। दूसरों की सेवा शुभ कर्म है इसीके प्रभाव से चित्त शुद्ध होता है इसी के प्रभाव से सबके भीतर बैठे हुए अन्तर्यामी भगवान प्रकाशित होते हैं। आदेश के अनुसार सङ्गठन करने का उद्योग करना, धर्म का यही लक्ष्य है यही उद्देश्य है। आदर्श धार्मिक क्षमा, धृति शौच शान्ति उपासना और ध्यान में परायण आदर्श का अवलम्बन विस्तार ही जीवन और संकीर्णता ही मृत्यु है। जहां प्रेम वहीं विस्तार जहां स्वार्थता वहीं संकोच। अतएव प्रेम ही जीवन का एक आधार है अवश्य अहन्तुक प्रेम करना चाहिये वही एक मात्र

जीवन गति का नियम न करने वाला है जिस कर्म से जीवों के मन में धीरे २ ब्रह्मभाव के उदय होने में सहायता पहुंचे वही कर्म उत्तम है यदि किसी को अधिक सुभीता देना हो तो बलवान की अपेक्षा दुर्बल को अधिक सुभीता दो सदा दाता बनो अपना सर्वस्व दे डालो पर बदले में कुछ न चाहो। दूसरों से प्रेम करो, सहायता करो, सेवा करो तुम से जो कुछ बने दूसरों के लिये करो पर सावधान पलटे में कुछ न चाहो। व्यक्तिगत, देशगत, कालगत, कर्माकर्म का साधन करो।

"परोपकाराय सतांहि जीविनम्"

श्री सच्चिदानन्देश्वराय नमः

ओ३म् श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः।

आलस्यं मृत्युरि त्याहुर्यत्नं जीवन मित्युत।

पिपीलिकाः कणशः कणशोऽन्नं समाहृत्य स्वविवरं प्रपूरयन्ति पुत्तिका वाल्मीक सञ्चयात् क्षणमपि न विरमन्ति।

सूर्यादयोग्रहता वेगेन भ्रमन्तः क्षणमपि विश्रान्तिं कांक्षन्ति क्षणमपि स्तम्भिते समीरणो कथमिव व्याकुलो भवन्तिजीवाः

हे सच्चिदानन्द अनन्त ज्ञान स्वरूप नित्य शुद्ध, बुद्ध, मुक्त स्वभाव, सर्वशक्तिमान सर्व हृदयान्तर्गत सर्वव्यापक प्रभु यदि मैं तुमको यहां मनुष्य शरीर में रहते हुए भी अपने आत्मा में साक्षात् नहीं कर पाता तो और कहां पा सकूंगा अय! मेरे प्यारे परमात्मा मेरे हृदय और नेत्रों में प्रकट होकर साक्षात् दर्शन दिखाओगे तो इस जीव का कल्याण होगा। ओ३म् परमात्मा यह न वह वरंच सारे पदार्थों में है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड उसका जीवन चरित्र है जो सब के हृदय में विराजमान होकर वह स्वयं लिख रहा है। सारे पदार्थ परमात्मा के शब्द हैं और बोलते हैं कि आओ २ मेरी ओर आओ। जो ईश्वर ध्वनि को नहीं सुनता वह बहरा है। जो मनुष्य उत्पन्न हुए पदार्थों के सौन्दर्य को नहीं देखता वह अन्धा है सौन्दर्य विवेक धर्म एक ही है तर्क से हम परमात्मा का चिन्तन करते हैं परन्तु सौंदर्य्य साक्षात् दर्शन कराता है। वह मनुष्य जो इन सकल पदार्थों को निरीक्षण करके भी धन्यवाद गायन नहीं करता वह गूंगा है। संसार की सुन्दर वस्तुयें एक विशेष सौन्दर्य्य की सत्ता की साक्षी हैं। प्रत्येक मधुर वस्तु अत्युत्तम मधु को दर्शाती है जो अन्य पदार्थों के सौन्दर्य

और उत्तमता का स्रोत है। उसीको परमात्मा कहते हैं जो वस्तु ईश्वर के समीप है वह उत्तम है और जो दूर है वह निकृष्ट कहाती है। प्रत्येक पवित्रतायें उस पवित्रता के स्रोत को दर्शाती हैं। जो अच्छा है वह अपने से अत्युत्तम श्रेष्ठताकी अस्तित्व का प्रमाण है उच्च स्वर से सकल पदार्थ पुकार रहे हैं कि परमात्मा सब में विद्यमान है। जब हम किसी वस्तु से प्यार करते हैं तो उसके आभ्यन्तर वास करने वाले परमात्मा के कारण से करते हैं। प्यासा मनुष्य जल की अभिलाषा इसलिये करता है कि जल में परमात्मा निवास करते हैं परमात्मा भक्तों के हृदय में प्रकट होते हैं महान् से महान् सुख अच्छे कामों के चिन्तन से होता है परमात्मा उनसे प्यार करते हैं जो बुरे कामों से घृणा कर श्रेष्ठ कार्यानुरत रहते हैं।

—[:*:]—

साधारण नियम ।

१—मनुष्य का पहिला कर्त्तव्य है कि सद्गुरुकी शरण में जावे और उनकी कृपा सम्पादन करने के लिये शुद्ध चित्त से उनकी सेवा करे ।

२—उन सद्गुरु के वचनों पर दृढ़ विश्वास रक्खे ।

३—एक ही मत मार्ग का अनुसरण करे ।

४—साधु सज्जन का सत्सङ्ग करे ।

५—विषयों के आधीन न हो ।

६—शत्रुओं को मित्र बनावे ।

७—अधिक उपाधि न बढ़ावे ।

८—निरन्तर सारासार का विचार करता रहे ।

९—भूत मात्र पर दया रक्खे ।

१०—अहर्निश परमात्मा का ध्यान करके उस पर दृढ़ आस्था रक्खे ।

—(०)—

प्रार्थना ।

हे परमेश्वर ! परमपिता परमात्मन् आप हमारे संरक्षक और सहायक तथा प्रेरक हैं । हम सब मिलकर एक तुम्हारी ही भक्ति करें, तुम्हारे चरणों में श्रद्धा भक्ति पूर्वक शिर झुकाते रहें और एकमात्र तुम्हारी ही सहायता चाहें । अय हमारे आत्मा जगदीश्वर आप अनन्त क्षमा स्वरूप और दयालु हो । हे करुणासागर ! हम तुम्हें छोड़ कर और किसकी शरण लें । केवल एकमात्र तुम ही हमारे आधार और अधिष्ठान हो । हे हमारे सर्वस्व ! परमात्मन् हम तुम्हारे पवित्र चरणों को वारंवार प्रणाम करते हैं । आप ही हमारी टेक हो और पत रखने वाले हो, प्रतिज्ञा पर आप ही दृढ़ताके स्थिति स्थापक हो । हे अनन्त ! अपार प्रकाश स्वरूप, पवित्र ज्योति परमात्मन् ! आप हमको श्रेयस्कर श्रेष्ठ मार्ग से अपनी प्राप्ति की ओर ले चलिये, आप ही हमारे सत् पथ प्रदर्शक नेता तथा संचालक हैं हे अन्तर यामिन् ! हम तेरे हैं, हमको अन्तरयामी रूप से प्रेरणा करो कि हम तेरे उस मार्ग पर चलें कि जिस पर तेरे पूर्ण भक्त ऋषि महर्षि चले हैं । और जिस मार्ग द्वारा तुमको प्राप्त होचुके हैं । जिन पर तुम्हारा परम अनुग्रह तथा प्रसाद हुआ हो । और हे सर्व शक्तिमान् ! हमारे प्रभु हमें उस मार्ग से कभी मत चलाओ जिस पर तेरे अभक्त चले हों, और

तुम्हारी प्रसन्नता से हम कभी वंचित न रहें हे प्रभु! तुम अन्तरयामी प्रेरक सखा हो, हम तुम्हारी ही शरण हैं। अतएव हमारी रक्षा करो। हे जगदीश्वर जगदाधार! हमको वह पवित्र दृढ़ात्मिका बुद्धि प्रदान करो, कि जिसमें केवल एक मात्र तुम्हारा ही दृढ़ विश्वास तथा निश्चय हो। हमको वह अंहकार दो जिसमें हम अपना आपा तुमको कह सकें, मनमें तुम्हारा शिव संकल्प उठै, चित्त में तुम्हारा ही चिन्तन रहै, हमारे नेत्र और हृदय खुले हों, और उनपर तुम्हारा पूरा अधिकार हो। हमारे सब के द्वारा केवल आप की जय हो, आप हमारे जीवन के नियन्ता प्राण स्वरूप हो। हे स्वामिन्! हमारी प्रत्येक क्रियायें और चेष्टायें आपके चरणों में समर्पण होवें। हमारे भाव महान् उदार तथा गम्भीर हों। हम सब प्राणी मात्र को अपना ही आत्म स्वरूप देखें। और सबकी भलाई में अपनी भलाई समझें, अहर्निश परोपकार में रत रहें, और तुम्हारी ही भक्ति का सर्वत्र प्रचार करते हुये, अपने जीवन को सफल करते हुये, तुम्हारे पवित्र ज्योतिर्मय चरणों के समीप बैठने के योग्य बनें। हे पतितपावन! दीनों के उद्धार करने वाले परमात्मन् हमको ऐसी उदार बुद्धि दीजिये कि जिससे हम दीन दुखियों की सहायता सच्चे हार्दिक

भाव से करें। हमें तुम्हारे प्रेम में ही जीवन प्रिय हो। हे विश्वात्मा! विश्वस्वरूप!! हम तुम्हारे भक्ति मार्ग पर चलते हुये महान् दुःखों को भी सानन्द सहन कर सकें, तुम्हारे भजन में दृढ़ रहें, सबके साथ पवित्र प्रेम करें। हे प्रेमाकर! हम सबको अपना ही आत्मा जानें, हमारा आचरण सबकी भलाई के लिये हो। हे अनन्त शक्ति परमात्मन्! आपकी शक्तियें अपरिमित वे अन्दाज हैं, तुम्हारी दात से कोई बढ़ नहीं सकता है। तुम्हारी दक्षिणा ज्योति की तरह सबके ऊपर जगमगा रही है। तुम्हारी शक्तियों और सच्चे उदार वचनों, मेहरवानियों का कोई नियन्ता नहीं है। कोई नहीं कह सकता कि उसने मुझे नहीं दिया है। तुम्हारे द्वारसे कोई निराश नहीं गया है। सबने अभीष्ट फल प्राप्त कर जीवन का फल पाया है। हे! राम कृष्ण आदि अनन्त नामों और रूपों के धारण करने वाले, हमारे सच्चे प्रभु, अन्त में हमारी यही प्रार्थना है, कि हम तेरे सच्चे भक्त बनें, तेरी ही भक्ति का प्रचार करें, हम सब के द्वारा तुम्हारी ही इच्छा पूर्ण हो, सर्वत्र तुम्हारा ही राज हो। हे अनन्त अपार ज्ञानानन्द स्वरूप। आपको हमारा अनन्त धन्यवाद हो और आपका हमको आशीर्वाद हो। अतएव साञ्जली बद्ध आपको भूयापि नमस्कारों पर नमस्कार है। ॥ ओ३म् शंकरोतु शंकरः ॥

भगवद्भक्ति आश्रम,

रामपुरा।

~o~

यह आश्रम रेवाड़ी जंक्शन से पश्चिम दिशा में लगभग एक कोस के अन्तर पर जङ्गल में अति पवित्र भूमि में बना है। जल की सुविधा के लिये एक कूप है दूसरा तालाव "रामसर" तीर्थरूप है जो अभी खोदा जारहा है, इसमें पक्के घाट बनाये जाने का आयोजन होरहा है। तालावके आसपास कई बीघों में उपयोगी वृक्ष लगे हैं। लगभग ५०० बीघे भूमि आश्रम से लगी हुई गौओं के चरने के लिये श्री लेफटिनेण्ट राव बलवीरसिंहजी ने आश्रम के लिये प्रदान की है जिसमें गौ, मृगादि स्वछन्द चरते हैं। इस बन में शिकार नहीं खेला जाता।

इस समय आश्रम में एक ब्रह्मचर्य्याश्रम २ साधारण पाठशाला ३ कन्या पाठशाला ४ अछूत पाठशाला और अतिथियों व सत्सङ्गियों के ठैरने का स्थान व एक पुस्तकालय है।

उद्देश्य ।

१—श्रीभगवान की भक्ति का प्रचार करना ।

२—गौरक्षण और उसके लिये गौचर भूमि छुड़वाना ।

३—जङ्गलों में वृक्ष लगवाना और उसके बीच में जलाशय बनवाना ।

४—शिक्षा का प्रचार करना (जिसमें मनुष्य मात्र विद्या लाभ कर सकें) और प्राचीन प्रथा का फिर प्रचलित करना ।

५—बीमारियों के अवसर पर दवाई बांटना ।

६—आसपास के ग्रामों में परस्पर के झगड़े और वैमनस्य मिटाकर शान्ति और प्रेम बढ़ाना ।

७—सब संस्थाओं में भगवद्भक्ति और धर्म्म का भाव जाग्रति करना ।

८—राजा और प्रजा सब ही का हित-चिन्तन करना ।

यह आश्रम नियमानुसार एक कमेटी की संरक्षता में है । आश्रम से सत्य शब्द संग्रह और सार संग्रह पुस्तक महसूल डाक के ~) के टिकट भेजने पर मुफ्त भेजी जाती हैं ।

नोट—आश्रम से "ज्ञान, योग भक्ति मार्ग" नाम का एक मासिक पत्र हिन्दी भाषा में प्रकाशित करने का विचार है। यदि भक्ति जन प्रयत्न करके ५०० ग्राहकों के नाम भेज दें तो पत्र शीघ्र जारी कर दिया जावे।

विनीत—

दिलीप वनस्थी

भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा

पो॰ रेवाड़ी जि॰ गुड़गांव

(पंजाब)

Printed by Saryudayal Dikshit at the
Mittra Press, Etawah.
Published by Dalip Singh Bhagwadbhakti
Ashram, Rampura.

पुस्तक मिलने का पताः—

भगवद्भक्ति आश्रम,

रामपुरा पो० रेवाड़ी

ज़ि० गुड़गांव (पञ्जाब)

—०*०—

नोटः—डाक द्वारा पुस्तक मँगाने वाले सज्जनों को चा-
हिये कि ᐟ) टिकट महसूल के लिये अवश्य भेजें।

—:०:—

॥ ॐ ॥

"कलौ तु केवला भक्तिः"

शब्द-संग्रह ।

प्रकाशक—

भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा

(रेवाड़ी)

पं० अनन्तराम के प्रबन्ध से

दरियागंज-दिल्ली—सद्धर्मप्रचारक प्रेस में छपा ।

५१०० प्रति   सं० १९८१   मूल्य प्रेम

नम्र निवेदन ।

मेरे प्यारे बन्धु वर्ग ! यदि आप स्वयं सुख और शान्ति चाहते हैं और संसार को सुखमय व शान्ति बनाना चाहते हैं; तो उस कल्याणकारिणी भक्ति का आचरण कर संसार में भक्ति फैलाने का प्रयत्न करो । जिस भक्तिमें मग्न होकर ऋषि मुनि नृत्य करते थे, जिस भक्ति के बल से भगवान राम और कृष्ण ने संसार को स्वर्ग बना दिया था उसका रस पान करने और कराने के लिये उन ऋषि, मुनि महात्माओं के बनाए गीत गाओ और उन गीतों को फैलाओ। मोक्षमें भक्ति से बढ़कर कोई साधन नहीं है और उपासना में गानेसे बढ़कर कोई तरीका नहीं है। देश के नर नारी और बालक यदि प्रेम में मग्न होकर भगवान के गीत गावेंगे तो भगवान अवश्यमेव मनवांछित फल प्रदान करेंगे ।

भक्तों का दास—दलीप बनस्थी

श्री भगवद्भक्ति आश्रम

रामपुरा पो० रेवाड़ी (दिल्ली)

देकर सबको दाना पानी रखता तू उनपर निगरानी ॥
राई को पर्वत कर देता, पर्वत राई कर धर देता ।
नगरों को तू निर्जन करता, वन में नगरी सिरजन करता ॥
ब्रह्मादिक तव ध्यान लगाते, नारदादि मुनिवर गुणगाते ।
गाते गाते वे थक जाते, तो भी पार न तेरा पाते ॥
हे ईश्वर हे जगदाधार महिमा तेरी अपरम्पार ।
हमारी रख लीजे प्रभू लाज, विनय यही है करते आज ॥
हे प्रभु रक्षा करो हमारी हम आये हैं शरण तुम्हारी ।
दिन भर के अपराध हमारे क्षमा करो करुणानिधी सारे ॥८

शब्द १२०

दोहा—धजा फड़के सुन्न में, बाजे अनहद तूर ।
तकिया है मैदान में, पहुंचेगा कोई शूर ॥

गगन मण्डल में जो जन जाकर सुने बेहद अनहद बानी ।
सातों रंग निरखता यहां पर हो जावे पूरण ज्ञानी ॥ टेक ॥
श्याम पुतलिया बदल आंख की रूप रंग देखो सारे ।
सप्त ऋषियों ने सात घाट पर भिन्न २ आसन मारे ॥
जिस में थाना सहस्र कमल का तीन लोक तहाँ विस्तारे ।
जनिता सविता देव सबन के इध्म रूप सातों धारे ॥
चूं चूं चैंकुला झाल समध की घंटा शंख बजैं न्यारे ।
धूम निहार गगन में धसि चल ज्योति जरैं नौलख तारे ॥

भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा।

यह आश्रम रेवाड़ी जंकशन से पश्चिम दिशा में लगभग एक कोस के अन्तर पर जंगल में अति पवित्र भूमि में बना है। जल की सुविधा के लिये तीन कूप और एक तालाब है। तालाब में कुछ पक्के घाट बनाये गये हैं। १०० बीघा भूमि में उपयोगी वृक्ष लगा कर उपवन बनाया गया है। आश्रम से लगी हुई ५०० बीघा भूमि गौओं के चरने के लिये श्री० लेफ्टीनेन्ट रायबहादुर राव बलवीरसिंह जी ने आश्रम को प्रदान की है, जिसमें गौ, मृग आदि स्वच्छन्द विचरते हैं।

इस आश्रम में एक ब्रह्मचर्याश्रम, साधारण पाठशाला, कन्यापाठशाला व अछूत पाठशाला और अतिथियों व सत्संगियों के ठहरने का स्थान व पुस्तकालय है।

ब्रह्मचर्याश्रम

इस समय आश्रम में २५ ब्रह्मचारी हैं। यह प्राचीन ऋषियों की भांति गुरुजनों की सेवा व स्वावलम्बन का जीवन व्यतीत करते हुए विद्योपार्जन करते हैं इनका भोजन व रहन सहन इतना सादा है कि एक ब्रह्मचारी का समस्त खर्च ५) मासिक है। स्वावलम्वी इतने हैं कि इन्होंने एक ६५ फीट गहरा कूप

स्वयं ही खोद लिया है। संस्कृत, देवनागरी, इतिहास, अंग्रेजी इत्यादि सब प्रकार की शिक्षा दी जाती है। व्याख्यान देना भी सिखाया जाता है।

कन्यापाठशाला—इनका जीवन भी बहुत सादा व तप का बनाया जाता है। संस्कृत, देवनागरी, गणित की शिक्षा इनको दी जाती है। रामायण व गीता इनके मुख्य ग्रन्थ हैं।

अछूत पाठशाला व साधारण पाठशाला में निकटवर्ती ग्रामों के बालक पढ़ने आते हैं। अछूतों को आश्रम में रखने का विचार हो रहा है। पुस्तकालय आरम्भिक अवस्था में है। धार्मिक ग्रन्थों का साधारण संग्रह हुआ है, हां एकान्त शाँत स्थानके कारण यह छोटा पुस्तकालय भी बड़ाउ पयोगी है।

रामपुरा आश्रम की भाँति दादरी, गढ़ीबोलनी, जोड़िया, खेटांवास, निखरी, नूरगढ़, खोयरी, पालम, दादरी, भटिन्डा आदि अन्य स्थानों में भी इसी प्रकार के आश्रम खोले गये हैं। इन आश्रमों के द्वारा विना मूल्य शिक्षा, सुख, शान्ति, प्रेम, निष्काम सेवा व भगवान की भक्ति का प्रचार करना एक मात्र उद्देश है—

———

उद्देश्य ।

१—श्री भगवान की भक्ति का प्रचार करना।

२—गौरक्षण और उसके लिये गोचर भूमि छुड़वाना।

३—जंगलों में वृक्ष लगवाना और बीच में जलाशय बनवाना।

४—शिक्षा का प्रचार करना (जिसमें मनुष्यमात्र विद्यालाभ कर सकें) और प्राचीन प्रथा का फिर प्रचलित करना।

५—बीमारियों के अवसर पर दवाई बांटना।

६—आस पास के ग्रामोंमें परस्पर के झगड़े और वैमनस्य मिटा कर शान्ति और प्रेम बढ़ाना।

७-सब संस्थाओंमें भगवद्भक्ति और धर्मका भाव जाग्रत करना।

८—राजा और प्रजा सब ही का हित चिन्तन करना।

यह आश्रम नियमानुसार एक कमेटी की संरक्षता में है आश्रम से सत्यशब्द-संग्रह, सारसंग्रह और भक्तियोग-संग्रह महसूल डाक के टिकट भेजने पर मुफ्त भेजी जाती है।

नोट- आश्रम से "ज्ञानयोग भक्तिमार्ग" नाम का मासिक पत्र हिन्दी भाषा में प्रकाशित करने का विचार है यदि भक्तजन यत्न करके ५०० ग्राहकों के नाम भेज दें तो पत्र शीघ्र जारी कर दिया जावे

(५) ५०० पुस्तकें श्री० लाला श्रीरामजी मन्त्री "दिल्ली काटन मिल्ज़" दिल्ली ने छपवाईं।

नोट–बैरंग पुस्तकें भेजने का नियम नहीं है।

पता––

श्रीभगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा,

पोस्ट रेवाड़ी (दिल्ली)

ॐ

* सत्य शब्द संग्रह *

प्रकाशिका ।

श्रीमती पार्वती देवी धर्मपत्नी ला०

नूनकरणदास ।

समर्पित ।

श्री भद्भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा रेवाड़ी ।

८०० प्रति	सं० १९८३	मूल्य प्रेम

भूमिका ।

प्यारे सज्जनों मैं आपकी सेवा में एक बड़े उत्तम कल्प वृक्ष के पुष्प समर्पण करता हूं जिस की गन्ध से तुम्हरा मन रूपी भ्रमर आप से आप उड़ना छोड़ कर शान्त होकर आनन्द को प्राप्त होगा। वह पुष्प सर्व आप्त पुरुषों के शब्द हैं जिनका भगवद्भक्तों में बड़ा ही आदर है। और जिन कल्पवृक्ष महात्माओं के इस पुस्तक में शब्द हैं उनके निम्नलिखित नाम हैं:—नरसो, नानक, नामदेव, रविदास, कबीर, सूरदास, तुलसदास मीरांबाई, चरणदास, मछन्दरनाथ, गोरखनाथ, गुलाबनाथ, भानीनाथ, सुन्दरदास, घीसादासादि। इन भजनों से आप लगों का अन्तःकरण रूपी दर्पण जब निर्मल होवेगा तब आपको बड़ा ही आनन्द विदित होगा। इन शब्दों में भक्ति ज्ञान वैराग्य और योग भरा हुवा है। जब इन में हमलोग प्रवेश करते हैं तो अपूर्व ज्ञान और प्रेम के दर्शन होते हैं। ये शब्द बड़े ही परिश्रम से प्राप्त हुए हैं। इन के गाने वालों को जो प्रेम होता है वही जानते हैं जैसे

गूंगे के गुड़ का स्वाद गूंगा ही जानता है प्रथम प्रार्थना व उपासना के शब्द हैं तदनन्तर ज्ञान और भक्ति रूप शब्द हैं ये क्रमशः चित के मल विक्षेपआवरण को दूर करते हैं और सोऽहं ज्योति का प्रकाश करके श्रुति को गगन पर चढ़ा कर सच्चे स्वामी में लय कर देते हैं।

॥ ओ३म् तत्सत्॥

॥ ओ३म्॥

सद्गुरु का उपदेश

ओ३म् तत्सत परब्रह्मणे नमः।

समुद्र जब स्थिर रहता है तब उसे ब्रह्म कहते हैं और उसी समुद्र में जब लहर उठती है तब उसी को हम शक्ति या माया कहते हैं वही देश काल निमित्त स्वरूप है। पहले रूप में वह ईश्वर जीव और जगत है दूसरे रूपमें वह अज्ञात और अज्ञेय है। सर्व शक्तिमत्तर्वसा

व्यापकता अनन्त दया इसी जगज्जननी जगदम्बा प्रेम रूपिणी भगवती के गुण हैं। प्रत्येक व्यक्ति के पीछे अनन्त शक्ति विद्यमान है। एक कणविन्दु कृष्ण, बुद्ध ख्रीष्ट, आदि और जगत् का विस्तार एक विन्दु को प्रकाशित करता है। एक आत्मा ब्रह्म भिन्न २ सर्व उपाधियों में प्रकाशित होता है। बड़प्पन की डींग दलबन्दी ईर्ष्यादि सदा के लिये छोड़ दो पृथिवी की भांति सहिष्णु हो लड़कपन की चंचलता और युवा पन की गम्भीरता दोनों मिलाकर सब के साथ प्रेम से रहो। आत्मा के स्वरूप का व्यक्त और कभी अव्यक्त भाव होता है। आत्मा मानों बादलों से ढके हुए सूर्य की न्याई है। हृदय को समुद्र के समान महान बना डालो क्षुद्र भावों को पार कर जावो अमंगल के आने पर भी आनन्द में उन्मत हो जाओ। संसार को एक चित्र की भांति देखो जगत् में कोई तुमको विचलित न कर सकेगा। अहंता को दूर कर दृढ़तासे खड़े हो जाओ काम कांचन मान यश को छोड़ कर ईश्वर को दृढ़ता से पकड़ो। विधि निषेध के घेरे में पड़े रहने से आत्मा का प्रसार नहीं होता। जो जितनी ही आत्मानुभूति का प्रकाश कर सकता है उसके

उतने ही विधिनिषेध कम हो जाते हैं। दूसरों की सेवा शुभ कर्म है इसी के प्रभाव से चित्त शुद्ध होता है इसी के प्रभाव से सब के भीतर बैठे हुए अन्तर्यामी भगवान् प्रकाशित होते हैं। आदेश के अनुसार संगठन करने का उद्योग करना धर्म का यही लक्ष्य है यही उद्देश्य है। आदर्श धार्मिक क्षमा धृति शौच शान्ति उपासना और ध्यान में परायण आदर्श का अवलम्बन विस्तार ही जीवन और संकीर्णता ही मृत्यु है। जहां प्रेम वहीं विस्तार जहां स्वार्थता वहीं संकोच। अतएव प्रेम ही जीवन का एक आधार है अवश्य अहेतुक प्रेम करना चाहिये यही एक मात्र जीवन गति का नियमन करने वाला है जिस कर्म से जीवों के मन में धीरे२ ब्रह्मभाव के उदय होने में सहायता पहुंचे वही कर्म उत्तम है यदि किसी को अधिक सुभीता देना हो तो बलवान की अपेक्षा दुर्बल को अधिक सुभीता दो सदा दाता बनो अपना सर्वस्व दे डालो पर बदले में कुछ न चाहो। दूसरों से प्रेम करो सहायता करो सेवा करो तुम से जो कुछ बने दूसरों के लिये करो पर सावधान पलटे में कुछ न चाहो। व्यक्तिगत, देशगत, कालगत कर्माकर्म का साधन करो।

"परोपकाराय सतांहि जीवनम्"

श्री सच्चिदानन्देश्वराय नमः

ओ३म् श्री गुरू चरण कमलेभ्यो नमः

आलस्यं मृत्युरित्याहुर्यत्नं जीवनमित्युत

पिपीलिकाः कणशः कणशोऽश्नं समाहृत्यस्वविवरं प्रपूरयन्ति । पुत्तिका वाल्मीक संचयात्क्षणमपि न विरमन्ति। सूर्यादयो महता वेगेन भ्रमन्तः क्षणमपि विश्रान्तिं न कांक्षन्ति । क्षणमपि स्तभिते समीरणे कथमिव व्याकुली भवन्ति जीवाः ।

हे सच्चिदानन्द अनन्त ज्ञानस्वरूप नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्त स्वभाव सर्व शक्तिमान सर्व हृदयान्तर्गत सर्व व्यापक प्रभु यदि मैं तुम को यहां मनुष्य शरीर में रहते हुये भी अपने आत्मा में साक्षात नहीं करपाता तो और कहां पा सकूंगा अय मेरे प्यारे परमात्मा मेरे हृदय और नेत्रों में प्रकट होकर साक्षात दर्शन दिखाओगे तो इस जीव का कल्याण होगा । ओ३म् परमात्मा यह न वह वरंच सारे पदार्थों में है सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड उसके जीवन का वृत्तान्त है जो सब के हृदयमें विराजमान होकर यह स्वयं लिखरहा है । सारे पदा-

ये परमात्मा के शब्द हैं और बोलते हैं कि आओ २ मेरी ओर आओ। जो ईश्वर ध्वनि को नहिं सुनता वह बहरा है जो मनुष्य उत्पन्न हुए पदार्थों के सौंदर्य को नहीं देखता वह अन्धा है सौन्दर्य विवेक धर्म एक ही है तर्क से हम परमात्मा का चिन्तन करते है परन्तु सौंदर्य साक्षात दर्शन करता है। वह मनुष्य जो इन सकल पदार्थों को निरीक्षण करके धन्यवाद गायन नहीं करता वह गूंगा है। संसार को सुन्दर वस्तुयें एक विशेषसौंदर्य की सत्ताकी साक्षी हैं प्रत्येक मधुर वस्तु अत्युत्तम मधु को दर्शाती है जोअन्य पदार्थों के सौंदर्य और उत्तमता श्रोत है। उसी को परमात्मा कहते हैं जो वस्तु ईश्वर के समीप है वह उत्तम है और जो दूर हैं वह निकृष्ट कहाती है। प्रत्येक पवित्रतायें उस पवित्रता के श्रोत को दर्शाती हैं। जो अच्छा है वह अपने से अत्युत्तम श्रेष्ठता के अस्तित्व का प्रमाण है उच्च स्वर से सकल पदार्थ पुकार रहे हैं कि परमात्मा सब में विद्यमान है। जब हम किसी वस्तु से प्यार करते हैं। तो उसके अभ्यान्तर वास करने वाले परमात्मा के कारण से करते हैं प्यासा मनुष्य जल को अभिलाषा इसलिये करता है कि जल में परमात्मा निवास करते

हैं परमात्मा भक्तों के हृदय में प्रकट होते हैं महान् से महान् सुख अच्छे कामों के चिन्तन से होता है परमात्मा उनसे प्यार करते है जो बुरे कामों से घृणा कर श्रेष्ठ कार्यानुरत रहते हैं।

साधारण नियम

१. मनुष्य का पहला कर्तव्य यह है कि सद्गुरु की शरणमें जावे और उन की कृपा सम्पादन करने के लिये शुद्ध चित्त से उन की सेवा करे।

२. उन सद्गुरु के वचनों पर दृढ़ विश्वास रक्खे।

३. एक ही मत मार्ग का अनुसरण करे।

४, साधु सज्जन का सत्संग करे।

५. विषयों के अधीन न हो।

६. शत्रुओं को मित्र बनावे।

७. अधिक उपाधि न बढ़ावे।

८. निरन्तर सारासार का विचार करता रहे।

९. भूत मात्र पर दया रक्खे।

१०. अहर्निश परमात्मा का ध्यान करके उन पर दृढ़ आस्था रक्खे।

मंगलाचरण ।

दोहा–ओ३म् निरंजनं, दुखभंजनं ररंकार ओङ्कार ।
सत्य पुरुष सोऽहं तुही अलखं सर्वाधार ॥
हो गुरु थारी बेलख माया जी ।

अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

गुरु ब्रंह्मा गुरु विष्णु र्गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरु रेव परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥
श्री गुरु श्री गोविन्द पद मंगल हित करुं ध्यान।
मंगल श्री व्रजराज घर जो पाऊं सन्मान ॥
काहू के बल भजन को काहू के आचार।
दास भरोसे राम क सोवत पांव पसार ॥

शब्द १

ओ३म् निरंजन ररंकार प्रभु सोऽहं सत्यनाम करतार ।
अच्युत, गुरु गोविन्द दातार परमानन्द रूप निरधार।
एक अखण्ड ज्ञान, भण्डार तुमरी ज्योति का उजियार।
मैं, मैं, मैं, पन सर्वाधार, नेति नेति कर बेद उचार ।
राम आत्मा अपरम्पार शङ्कर ब्रह्म सर्व का सार ।
ओत प्रोत सब में निरंकार, जीवन प्राण आप ओंकार

हरि नारायण अग्नि तार देव देव मैं करूं हूं पुकार ।
कृष्णानन्ता चल हं गीड़, हुं फट अज्ञा सर्व पसार
विनवों तुम को बारम्बार प्रीतम प्यार करो उद्धार ।
तद्धन गणपति नैन मझार, होवे अनन्त तुम्हें नमस्कार

शब्द २

दोहा—पुरुष प्रकृति ईश मिल अकार उकार मकार ।
सर्व वेद का मूल है एक शब्द ओंकार ॥
राम नाम के लेत ही होत पाप को नाश ।
ज्यों चिनगारी आग की पड़े पुरानी घास ॥
तुलसी अपने राम को रीझ भजो चाहे खीज ।
उलटा सीधा जामिये पड़े खेत में बीज ॥

हमारे प्रभु एक तुमही ओंकार । टेक ॥
मात पिता गुरु बन्धु सहोदर धन विद्या परिवार । टेक
मन बल बुद्धि प्राण तुम ही हो नयनन में उजियार ।
हरि होकर हरे रंग मेंदीखो पत्र पुष्प फल हार ॥ह० १
धरणी आकाश शशि और तारे विजली में चमकार ।
ऊपर नीचे पर्वतसागर सब तुम अपरम्पार ॥ह० २॥
तुम ही सूरज में हो गरजो बरषो अमृतधार ।
एक धुनि हो तुम से सब को तुमरा बार न पार ॥ह०१॥
सुंदर शक्ति विकाश शुद्धता हमको दे दातार ।
काम क्रोधमदलोभ निवारो परमानंद दो प्यार ॥ ह० ॥

हिरङ्क आप तासु मुख साजा लहनी शिव आधारा है
द्वादश कमल हृदय के मांही जनक गुरु शिव ध्यान लगाई
सोहं शब्द तहां धुनि छाई गण करें जय जय कारा है ॥
दो दल कमल कण्ठ के मांहीं ता मध्य बसे अविद्या माई
हरी हर ब्रह्मा चंवर दुलाई जहां श्रटं नाम उचारा है
तापर कंज कमल है भाई इक भौंरा दो रूप दिखाई।
निज मन करो जहां ठकुराई सो नयनन पिछवारा है ॥
कमलन भेद कहा निरवारा यह रचना सब पिण्ड मंझारा
सत सङ्गत कर गुरु शिर धारा वहां सत्य नाम उचारा है ॥

शब्द ९५

दोहा–धमा फड़कै सुन्न में बाजे अनहद तूर।
तकिया है मैदान में पहुंचेगा कोई ॥

गगन मण्डल में जो जन जाकर सुने बेहद अनहद बानी।
सातों रङ्ग निरखता यहां पर हो जावे पूरन ज्ञानी॥टेक॥
श्याम पुतलियो बदल आंख की रूप रग देखो सारे।
सप्त ऋषियों न सात घाट पर भिन्न २ आसन मारे॥
शिर में थाना सहस्त्र कमल का तीन लोक यहां विस्तारे
जनिता सविता देव सबन के सूक्ष्म रूप सातों धारे ॥
घूंघू चैंकुला झाल सनख की घंटा शंख बजैं न्यारे।
धूम नोहार गगन में चंचिचल ज्योति जरें नौलख तारे

दीन दयाल कृपाल दयानिधि भक्तन के रखवारे । १
पापी पतित गीध गनका से कोटिक जन निस्तारे ।२
जहां २ भीड़ पड़ी भक्तन पर तुरत हि आप पधारे ।३
रावण कुम्भकरण से योधा महा युद्ध कर मारे ॥४

शब्द १२१

सुरता है म्हारी धोबनिया म्हारा दाग़ जिगरका धोय।
तनकर कूंडी मति मसाला या ही में सौण करो ।
लोभ लकरिया ठोक जराओ कुन्दी तो खूब करो ।१
समता नीर ज्ञान का साबुन सत का मावा दो ।
शील शिला पर दे फटकारो या विधि साफ करो ।२
खैंच तान कर तह बनालो गुलझिट मत राखो ।
जन्म २ के दाग़ लगे हैं अब के तो डारो याने धोय ।४

शब्द १२२

मालिक कुल आलम के हो, तुम सच्चे श्रीभगवान। टेक
सूरज चांद पवन और पानी, धरती बीच असमान ।
सब में जलवा तेरा ही देख्यो, कुदरत पर कुरबान।१
भारत में अर्जुन के कारण, आप बने रथवान ।
उसने अपने कुल को देखा छुट गये तीर कमान ॥२॥
ना कोई मारे ना कोई मरता, तेरा ही अज्ञान ।

जो रोवे सो बहुरे तो रोवे दिन रात।
तन छीजे वह ना मिले सहजो कूड़ी बात ॥६६॥

वेदमंत्राणी।

अप नः शोशुचदघमग्ने शुशुग्ध्यारयिम्।
अपः नः शोशुचदघम् ॥ १ ॥

हे अग्ने ; आप हमारे पाप का बार२ निवारण किजिये,

धनको अच्छे प्रकार शुद्ध कराइये तथा हम लोगों के पापकी शुद्धि के अर्थ दण्ड दीजिये ॥१॥

सुऽक्षेत्रिया सुगातुया वसूया च यजामहे।
अप नः शोशुचदघम् ॥ २ ॥

हे अग्ने जिस से धनकी चाहना हो जिस में अच्छी पृथिवी हो और जो अच्छा खेत हो उस में हम लोग संग देते हैं, वे आप हम लोगों के दुष्ट व्यसन को दूर कीजिये ॥२॥

प्रयद भन्दिष्ठ एषां प्रारमाकासश्च सूरयः।
अप नः शोशुचदघम् ॥ ३ ॥

हे अग्ने आप की सभा में इन के बीच हम लोगों से, अत्यन्त बुद्धिमान विद्वान् सभासद हो अति कल्याण, करने हारे आप हम लोगों के दुःख रूप पाप को दूर कीजिये ॥३॥

प्र यत्ते अग्ने सूरयो जायेमहि प्र ते वयम्।
अप नः शोशुचदघम् ॥ ४ ॥

हे अग्ने! जो आप के पूर्ण विद्यावन्त सभासद हैं वैसे ही हम लोग भी हों। तुम हम लोगों के विरोध

रूप पाप को अच्छे प्रकार दूर कीजियेगा ॥ ४ ॥

प्र यदग्ने सहस्वतो विश्वतो यन्ति भानवः ।
अप नः शोशुचदघम् ॥ ५ ॥

हे विद्वानो ! जिस प्रशंशित बल वाले भौतिक अग्नि की किरण सब जगह से फैलती हैं जो हम लोगों के पाप को दूर करता है ॥ ५ ॥

त्वं हि विश्वतोमुख विश्वतः परि भूरसि ।
अप नः शोशुचदघम् ॥ ६ ॥

हे जगदीश्वर आप ही सब ओर से सब के ऊपर विराजमान हैं इस से हम लोगों के पाप को दूर कराइये ।

द्विषो नो विश्वतो मुखातिनावेव पारय ।
अप नः शोशुचदघम् ॥ ७ ॥

हे परमात्मन् जैसे नाव से समुद्र को पार हों वैसे हम लोगों को विरुद्ध चलने वाले उन से पार पहुंचाइये और हम लोगों के पापों को दूर कीजिये ॥ ७ ॥

स नः सिन्धुमिव नावयाति पर्षा स्वस्तये ।

अप नः शोशुचदघम् ॥ ८ ॥

ऋ० मं० १ सू ९७ मं० १-८

हे जगदीश्वर सो आप कृपा करके हम लोगों के सुख के लिये नाव से जैसे समुद्र को पार होते हैं वैसे दुखों के अत्यन्त पार कीजिये और हम लोगों के पाप को दूर कीजिये ॥ ८ ॥

वैश्वानरस्य सुमतौ स्याम राजा हिकं भुवनानामभिश्रीः। इतो जातो विश्वमिदं विचष्टे वैश्वानरो यतते सूर्येण ॥ ९ ॥

ऋ६ मं० १ स ९८ मं० १

जो वैश्वानर प्रसिद्ध हुये इस प्रत्यक्ष सुख को व समस्त जगत् को विशेष भावसे दिखलाता है और जो सूर्य लोक के साथ यत्न करने वाला होता है, जो लोकों का सब प्रकार से धन है जो अधिपति है उस भौतिक अग्नि की श्रेष्ठमति में ही हम लोग स्थिर हों ॥ ९ ॥

सनाद्दिवं परि भूमा विरूपे पुनर्भुवा युवती

स्वेभिरेवैः । कृष्णेभिरक्तोषा रुशाद्भिर्वपुर्भिरा चरतो अन्यान्या ॥ १०

ऋ० मं० १ सू० ६२ मं० ८

जैसे तुम सनातन कारण से आकाश और भूमि को प्राप्त होकर बार २ उत्पन्न होकर युवावस्था को प्राप्त हुए स्त्री पुरुष के समान विविध रूप से युक्त रात्रि दिन दक्षिण आदि अवयव प्राप्ति के हेतु रूपादि गुणों के साथ शरीर वा परस्पर आकर्षणादि को प्राप्त करने वाले गुणों के साथ भिन्न २ परस्पर मिलते हुए जाते आते हैं। वैसे स्वयंवर से विवाह करके एक दूसरे के साथ प्रीति युक्त हो के सदा आनन्द में वर्त ॥ १० ॥

सैनेव सृष्टाम दधात्यस्तुर्न दिद्युत्त्वेष प्रतीका । यमो ह जातो यमो जनीत्वं जारः कनीनां पतिर्जनीनाम् ॥ ११ ॥

ऋ० मं० १ सू० ६६ मं० ४

हे मनुष्यो जो नियम करने वाला, प्रकट, सर्वथा नियम कर्त्ता, जन्मादि कारण युक्त, कन्यावत् वर्त्तमान

रात्रियों के आयु का हनन कर्त्ता, सूर्य के समान उत्पन्न हुई प्रजाओं का पालन कर्ता, प्रेरित, अच्छी शिक्षा को प्राप्त हुई वीर पुरुषों की विजय करने वाली सेना के समान शत्रुओं के ऊपर शस्त्र अस्त्र चलाने वाले दीप्तियों के प्रतीत करने वाले बिजली के समान अपरिपक्व विज्ञान युक्त जन को धारण करता है उसका सेवन करो ॥ ११ ॥

आदित्ते विश्वे क्रतुं जुषन्त शुष्काद्यद्देव जीवो जनिष्ठाः । भजन्त विश्वे देव त्वं नाम ऋत सतपन्तो अमृतमेवैः ॥ १२

ऋ० मं० १ सू० ६८ मं० २

हे जगदीश्वर ! आप का आश्रय करके जो सब अतिज्ञान युक्त एक विद्वान् लोग प्राप्ति कारक गुणों और धर्मानुष्ठान के तप से आप के दिव्य गुण प्राप्त करने वाले बुद्धि और कर्म प्रसिद्ध अर्थ युक्त संज्ञा को सिद्ध प्रीति से सेवाकरें वे सत्य रूप को सेवन करते हैं वैसे मोक्ष को इच्छादि गुणवाला चेतन स्वरूप मनुष्य इस के अन्तर ही इस सब को प्राप्त हो ॥ १२ ॥

शुक्र शुशुक्वाँ उषो न जारः पप्राः समीची

दिवो न ज्योतिः । परि प्रजातः क्रत्वा बभूथ भुवो देवानां पिता पुत्रः सन् ॥१३

ऋ० १, ६६, १

जो मनुष्य प्रातः काल की बेला के आयु के हन्ता सूर्य के समान वीर्यवान, शुद्ध, अपनी विद्या से पूर्ण भूमि के मध्य प्रकाश से पृथिवी को प्राप्त हुए दीप्ति के समान सब प्रकार प्रसिद्ध उत्पन्न उत्तम बुद्धि वा कर्म्म के साथ वर्त्तमान विद्वानों के पुत्र का पिता (पढ़ाने वाला) होता है उस का सेवन सब मनुष्य करें ॥ १३ ॥

देवो न यः पृथिवी विश्वमाया उपक्षेति हितमित्रो न राजा। पुरः सदः शर्म्मसदो न वीरा अनवद्या पतिजुष्टेव नारी ॥१४

जो देवता भूमि के समान विश्व को धारण करने वाले मित्रों को धारण किये हुए राजा के समान जानता है तथा प्रथम युद्ध के जानने, सुख में स्थिर होने और युद्ध में शत्रुओं के फेंकने वाले के समान तथा विद्यासौन्दर्यादि शुद्ध गुण युक्त नारी जो पति की सेवा करने वाली उसके समान सुखों में निवास कराता है उस को सदा सेवन

करो ॥ १४ ॥

उत ब्रुवन्तु जन्तव उदग्निर्वृत्र हाजनि । धनञ्जयो रणे रणे ॥ १५ ॥

जो युद्ध में धन से जिताने वाला मेघ को नष्ट करने हारे सूर्य के समान परमेश्वर शुभ गुणों के दान करने वाले मनुष्यों के लिए धन उत्पन्न करता है और सब मनुष्य हिंसा रहित उसी के विचार को परस्पर उपदेश करें ॥ १५ ॥

विचार सागर ।

अथ वस्तुनिर्देशरूप ।

अथ वस्तु मंगल ॥ दोहा ॥

जो सुख नित्य प्रकाश विभु नाम रूप आधार ॥ मति न लखै जिहिं मति लखै, सो मैं शुद्ध अपार ॥१॥ अब्धि अपार स्वरूप मम, लहरी विष्णुमहेश ॥ विधि रविचंदावरुणयम शक्ति धनेशगणेश ॥२॥ जा कृपालु सर्वज्ञको, हिये धारत मुनी ध्यान ॥ ताको होत उपाधिते, मोमैं मिथ्या भान ॥३॥ व्है जिहिं जाने बिन जगत, मनहुजेवरीसांप ॥ नशै भुजङ्ग जग जिहिं लहे, सोऽहं आपैआप ॥४॥ बोध चाहि जाको सुकृति, भजत राम निष्काम ॥ सो मेरो है आतमा, काकूं करुं प्रणाम ॥५॥

॥ ग्रंथ महिमा ॥ दोहा ॥

भर्यो वेद सिद्धांत जल, जामैं अतिगंभीर ॥ अस विचार सागर कहुं पेखि मुदित व्है धीर ॥६॥ सूत्र भाष्य वार्तिक प्रभृति, ग्रंथ बहुत सुरवानी ॥ तथापि मैं भाषा करूं लखि मतिमंद अजानी ॥७॥ कविजनकृत भाषा बहुत, ग्रंथ जगत

निवेदक ।

प्रिय पाठक गण ! आप की सेवा में यह बड़े २ महात्माओं के गम्भीर अनुभवद्वारा लिखित उत्तम शब्दों का तथा दोहे, चौपाई, वेदमन्त्र और विचार सागर का कुछ भाग समर्पित किया जाता है। आशा है आप लोग इन शब्दों का नित्य प्रति पाठ करके अपना लोक और परलोक दोनों सुधारेंगे । इस पुस्तक के छपवाने में जो धन व्यय हुवा है वह मेरी भग्नी श्रीमती चम्पादेवी की ओर से किया गया है। यह पुस्तकें अब तक कृष्णलाल बजाज जींद, श्रीमती रानी निहालदेवी धर्म पत्नी राव बहादुर बलबीरसिंह जी, श्रीमती रानी नारायणीदेवी धर्म पत्नी सर शादीलाल चीफ जस्टिस, लाला रामजीदास ला० श्रीराम, पं० श्रीराम, डा० रघुनाथ, डा० राम नाथ जी मा० आशास्वरूप जी आदि सज्जनों की ओर से लगभग ३०००० के बिना मूल्य ही वितरण की गई हैं जिससें लोगों को बड़ा लाभ हुवा है अब इस पुस्तक पर मूल्य रखने का प्रयोजन अर्थ संचय करना नहीं है। इस पर केवल लागत मात्र मूल्य रक्खा गया है और वह भी

इस हेतु से रक्खा है कि इस की आय से यह पुस्तक फिर भी छपती रहे। आशा है पाठक उत्साह दिखायेंगे।

निवेदक

नूनकरणदास

भिवानी।

भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा।

यह आश्रम रेवाड़ी जंकशन से पश्चिम दिशा में लगभग एक कोस के अन्तर पर जंगल में अति पवित्र भूमि में बना है। जल की सुविधा के लिये पांच कूप और एक तालाब है। २०० बीघा भूमि में उपयोगी वृक्ष लगाकर उपवन बनाया गया है। आश्रम से लगी हुई ५०० बीघा भूमि गौओं के चरने के लिये श्री० लेफटीनेन्ट राव बाहादुर राव बलबीर सिंह जी ने आ. श्रम को प्रदान की है। इसी भान्ति दादरी, गढ़ीबोलनी, जा. ड़िया खेंटावास, निखरी, नूरगढ़, खोयरी, पालम, भटिण्डा, आदि अन्य स्थानों में आश्रम को कई सज्जनों ने भूमि प्रदान की है उन में वृक्ष व जलाशय बनाये गये हैं॥

इस आश्रम में एक ब्रह्मचर्याश्रम, कन्या पाठशाला वा अछूत पाठशाला और अतिथियों व सत्संगियो के ठहरने का स्थान पुस्तकालय, प्रेस, गोशाला व औषधालय भी है।

निवेदक

भूमानन्द ब्रह्मचारी

भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा (रेवाड़ी)

छप गई ! छप गई !! छप गई !!!

बिना गुरु के सिद्धान्त कौमुदी

भाषा फक्किका प्रकाश प्रथम खण्ड

इस पुस्तक में सिद्धान्त कौमुदी की गूढ़ फक्किकायें मूलार्थ सहित सरल हिन्दी भाषा में विस्तार पूर्वक भाष्यादि ग्रन्थों से पण्डित प्रभाकर शास्त्री ने कठिन परिश्रम से संग्रह की हैं। यह इतनी सरलता पूर्वक लिखी गई है कि विद्यार्थी गुरू की सहायता के बिना लघु कौमुदी पढ़ कर स्वयं सिद्धांत कौमुदी पढ़ सकता है अधिक क्या कोई पदार्थ ऐसा नहीं है जो उन्होंने इस में छोड़ा हो। अतः विद्यार्थी गणों को इस से लाभ उठाना चाहिये। यदि विद्यार्थीगण इस में रुचि दिखा येंगे तो शीघ्र ही हम इस के आगे के संस्करण निकालने का आयोजन करेंगे। १५० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य ॥) पचास से अधिक लेने पर २०) सैंकड़ा कमीशन दिया जायगा।

२ शब्द सदाचार संग्रह।

इस में कबीर, सूरदास, गोरखनाथ, मीराँ बाई आदि अनेक महात्माओं की वाणियों का संग्रह है। इसके अतिरिक्त मनुष्य जीवनोपयोगी उत्तम उपदेशों का भी संग्रह है मूल्य ।-)

३ वेदोपनिषद् ।

इस पुस्तक में प्रथम ईश, कठ, केन, मुण्डक और मौण्डूक्य उपनिषद् मूल और अर्थ सहित हैं। इस के पश्चात् चारों वेदों से स्तुति, प्रार्थना, उपदेश आदि के मन्त्रों का संग्रह अर्थ सहित है। १६० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य केवल।-)॥

४ ज्ञान धर्मोपदेश ।

इस छोटी सी पुस्तक में वेद शास्त्र धर्म का सार संग्रहीत है। प्रथम वेद के उत्तम मन्त्र अर्थ सहित हैं फिर वेदान्त, ज्ञान, तथा धर्म के लेख और उत्तम कविताओं का संग्रह है मूल्य -)॥। इस के अतिरिक्त भक्ति ज्ञानयोग संग्रह शब्द संग्रह डाक व्यय भेजने पर भेजी जा सकती हैं।

नोट:—

जिन सज्जनों का इन पुस्तकों की एक दो प्रतियां मंगवानी हों वह मूल्य और डाक व्यय की टिकट भेज कर मंगा सकते हैं। अन्यथा वी० पी० द्वारा खर्चा अधिक लगेगा।

सूचना ।

आश्रम में प्रेस भी जारी कर दिया गया है। यहां पर बहुत सस्ती, सुन्दर तथा समय पर पुस्तकें छापी जाती हैं।

मैनेजर

भक्ति प्रेस भगवद्भक्ति आश्रम

रामपुरा (रेवाड़ी)

पुस्तक मिलने का पता:-

१. श्री भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा रेवाड़ी।

२. रामजस मल श्योप्रसाद कोठकपूरा।

मुद्रकः-भूमानन्द ब्रह्मचारी "भक्ति प्रेस" भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा (रेवाड़ी)